

विदेह

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड २८

तत्त्वचिन्तामणि

नव्य-न्याय, प्रमाणमीमांसा आ भाषादर्शन



मूल संस्कृत : गङ्गेश उपाध्याय

मैथिली अनुवाद : गजेन्द्र ठाकुर

विस्तृत साहित्यिक आ दार्शनिक समीक्षा

सम्पादक आ समीक्षक

आशीष अनचिन्हार

ISSN 2229-547X | 2026

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय खण्ड २८ तत्त्वचिन्तामणि

गङ्गेश उपाध्यायक दार्शनिक कृति आ गजेन्द्र ठाकुरक मैथिली-
अंग्रेजी प्रस्तुति पर विस्तृत आलोचनात्मक अध्ययन

सम्पादक आ समीक्षक : आशीष अनचिन्हार

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

ISSN 2229-547X · २०२६

प्रकाशन आ प्रतिलिप्यधिकार

समीक्षित मूल दर्शनग्रन्थ : तत्त्वचिन्तामणि। मूल संस्कृत लेखक : गङ्गेश उपाध्याय।

मूल फाइलमे निर्दिष्ट संस्कृतसँ मैथिली अनुवाद, सम्पादन आ विन्यास : गजेन्द्र ठाकुर। उपलब्ध संस्करणक अंग्रेजी सामग्रीक पृथक पाठ-परीक्षण एहि पुस्तकमे सम्मिलित अछि।

साहित्यिक-दार्शनिक आलोचना : आशीष अनचिन्हार। प्रकाशन-शृंखला : गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय, खण्ड २८।

मूल दर्शनग्रन्थक संस्करण-विवरण : प्रथम संस्करण २००४; परिवर्धित संस्करण २०२६; ISBN 978-93-6123-729-4 — संलग्न मूल DOCXमे उल्लिखित।

© २०२६ प्रीति ठाकुर आ गजेन्द्र ठाकुर। मूल प्रस्तुति आ विदेह प्रकाशनसम्बन्धी प्रतिलिप्यधिकार सुरक्षित।

एहि समीक्षामे शास्त्रीय मूल लेखक आ आधुनिक अनुवादकक भूमिका अलग राखल गेल अछि।

एहि पुस्तकमे तर्कक व्याख्या स्रोताधारित अछि; मूल संस्कृतक स्वतंत्र आलोचनात्मक संस्करणसँ शाब्दिक पाठ-मिलानक दावा नहि कएल गेल अछि।

अनुक्रम

तत्त्वचिन्तामणि : प्रमाण, भाषा आ तर्कक समानान्तर पाठ.....	8
सम्पादकीय भूमिका : कृतिक समुचित पहिचान.....	8
अध्ययनक कसौटी : पूर्वपक्ष, सिद्धान्त आ सीमाक त्रिकोण.....	8
प्रथम समीक्षा : भूमिका आ दार्शनिक प्रस्तावना.....	10
मङ्गलवाद : कारण आ बाधा-दूर करबाक अन्तर.....	10
प्रामाण्यवाद : उत्पत्ति आ ज्ञाप्तिक भिन्न प्रश्न.....	10
भ्रम : सीप, चानी आ ज्ञानक विषयता.....	11
प्रमाणक संगठन आ भाषाक अनुशासन.....	11
द्वितीय समीक्षा : प्रत्यक्षखण्डक परिचय.....	12
प्रत्यक्षक रूपरेखा : इन्द्रियजन्य ज्ञानसँ व्यापक ज्ञानमीमांसा धरि.....	12
षड्विध सन्निकर्ष : सम्बन्धक रूपसम्भावना.....	12
अभावज्ञान : अनुपलब्धि वा प्रत्यक्ष.....	12
मनोऽणुत्व आ अनुव्यवसाय.....	13
तृतीय समीक्षा : अनुमानखण्डक परिचय.....	14
अनुमितिक कारण : व्याप्ति आ लिङ्गपरामर्श.....	14
व्याप्तिपञ्चक आ परिभाषाक परीक्षा.....	14
उपाधि : साध्यक व्यापक मुदा हेतुक नहि.....	14
पक्षता, परामर्श आ प्रमाणाभाव.....	15
अर्थापत्ति आ अनुमानक सीमारेखा.....	15
हेत्वाभास : दोषसभक व्यवस्थित वर्गीकरण.....	15
चतुर्थ समीक्षा : ईश्वरानुमानक परिचय.....	17
क्षित्यादिकं सकर्तृकम् : दृष्टान्तक शक्ति आ जोखिम.....	17
देहविहीन कर्तृत्वक आपत्ति.....	17
दाहशक्ति : गुण, कारण आ प्रतिबन्धकाभाव.....	17

पुरुषार्थ, तत्त्वज्ञान आ मोक्ष.....	18
पंचम समीक्षा : उपमानखण्डक परिचय.....	19
गवय-दृष्टान्त : नाम आ वस्तुक सम्बन्ध.....	19
सादृश्यक सत्ता : एक सामान्य कि अनेक सम्बन्ध.....	19
प्राच्य नैयायिक आ मीमांसकसँ विवाद.....	19
उपदेशवाक्य आ सर्वनामक शक्ति.....	20
षष्ठ समीक्षा : शब्दखण्डक परिचय.....	21
शब्दप्रमाण : वक्ता, वाक्य आ विश्वसनीयता.....	21
आकाङ्क्षा, योग्यता, आसत्ति आ तात्पर्य.....	21
तात्पर्य आ अपौरुषेय वाक्यक प्रश्न.....	21
विधिवाद आ अपूर्वक सम्बन्ध.....	22
जातिशक्ति, योगरूढ़ि, समास आ आख्यात.....	22
सप्तम समीक्षा : प्रत्यक्षखण्डक विस्तृत परिशिष्ट.....	23
प्रारम्भिक प्रकरण आ मङ्गलवादक पुनर्विस्तार.....	23
प्रामाण्यक कारण-सामग्री आ ज्ञानक फल.....	23
अभावक प्रतियोगिता आ अधिकरण.....	23
सुवर्ण, वायु आ पदार्थमीमांसा.....	24
निर्विकल्पक-सविकल्पक आ प्रत्यक्षक अन्तिम प्रश्न.....	24
अष्टम समीक्षा : अनुमानखण्डक विस्तृत परिशिष्ट.....	25
व्याप्तिक अनेक लक्षण आ तकनीकी प्रतिदृष्टान्त.....	25
उपाधि आ अव्यभिचार : परिभाषा कठिन किएक.....	25
पक्षताक सम्भाव्य परिभाषासभ.....	25
केवलान्वयी, केवलव्यतिरेकी आ अर्थापत्ति.....	26
न्यायवाक्यक अवयव आ तर्कशिक्षा.....	26
हेत्वाभास आ बाधान्तक समापन.....	26

नवम समीक्षा : ईश्वरानुमानक विस्तृत परिशिष्ट.....	28
विषयक निर्धारण : ईश्वरानुमानमे पक्ष के अछि.....	28
कर्तृत्व, देह आ कार्यत्वक व्याप्ति.....	28
वेद, शब्द-संकेत आ सृष्टिचक्र.....	28
प्रतिबन्धकाभाव आ दाहशक्ति-विवादक दीर्घ रूप.....	29
दुःखाभाव, कर्मक्षय आ तत्त्वज्ञान.....	29
दशम समीक्षा : उपमानखण्डक विस्तृत परिशिष्ट.....	30
सादृश्यक सामान्यत्वक खण्डन.....	30
गवय, गदहा आ विपरीत तुलना.....	30
उपमिति बनाम अनुमान आ अर्थापत्ति.....	30
सर्वनाम, शक्ति आ शब्दार्थक प्रवेशद्वार.....	31
एकादश समीक्षा : शब्दखण्डक विस्तृत परिशिष्ट.....	32
वाक्यार्थक चार शर्त आ प्रसङ्ग.....	32
वेदक पौरुषेयत्व आ अपौरुषेयत्व.....	32
विधिवाक्य, संस्कार आ फलोत्पत्ति.....	32
पदार्थशक्ति : जाति, व्यक्ति आ योगरूढ़ि.....	33
समासक अर्थ आ गौण लक्षणा.....	33
आख्यात, क्रिया आ कर्तृत्व.....	33
शब्दप्रमाणक समापन : संकेत आ स्मरण.....	34
द्वादश समीक्षा : अध्ययन-सहचर आ द्विभाषिक संरचना.....	35
अध्ययन-सहचरक उपादेयता आ संरचनात्मक सीमा.....	35
मैथिली आ अंग्रेजी : दू माध्यम, एकरूप नहि.....	35
पूर्वपक्षक वाचकत्व : अनुवादक विश्वसनीयता.....	35
लिपि, पारिभाषिक शब्द आ अनुक्रम-सामञ्जस्य.....	36

त्रयोदश समीक्षा : द्विभाषिक पाठक सूक्ष्म परीक्षण.....	37
मङ्गलवाद : फल-सम्बन्धी पदक प्रत्यक्ष मिलान.....	37
प्रत्यक्षक 'ज्ञान' आ अंग्रेजी cognition.....	37
अवच्छेदक-अवच्छिन्न आ delimiter-delimited.....	37
अनुमानक 'अनुमिति' आ inferential cognition.....	38
व्याप्ति आ pervasionक संकेतार्थ.....	38
ईश्वरानुमान : inference of God कि proof of God.....	39
'पृथिवी आदि सकर्तृक' : हेतु-साध्यक सावधानी.....	39
उपमान : comparison आ शब्दार्थग्रहण.....	39
शब्दखण्ड : verbal testimonyक तात्पर्य.....	40
शब्द-वाक्य आ English sentence-meaning.....	40
संस्करणक अंग्रेजी लेखक-श्रेय आ प्रकाशन-व्यवस्था.....	40
द्विभाषिक परीक्षणक समेकित निर्णय.....	41
चतुर्दश समीक्षा : समेकित दार्शनिक निर्णय.....	42
प्रत्यक्षसँ शब्द धरि प्रमाणसभक परस्पर परीक्षा.....	42
परिभाषाक सौन्दर्य आ तर्कक कठिनाई.....	42
विदेह समानान्तर इतिहास-दृष्टि.....	42
मूल लेखकीय योगदान आ अनुवादक अवदानक अलग निर्णय.....	43
पाठान्तर-सत्यापनक शेष आवश्यकता.....	43
उपसंहार : जिज्ञासा, प्रतिपक्ष आ प्रमाण.....	44

मूल पाठाधारक विषयगत सूची.....	45
मूल पाठसँ चयनित प्रमाण-सङ्केत.....	46
द्विभाषिक पारिभाषिक शब्दावली.....	49
समग्र शोध-निर्णय : मूल्याङ्कन-सारणी.....	51
ग्रन्थसूची.....	52

तत्त्वचिन्तामणि : प्रमाण, भाषा आ तर्कक समानान्तर पाठ

सम्पादकीय भूमिका : कृतिक समुचित पहिचान

‘तत्त्वचिन्तामणि’क मूल रचनाकार गङ्गेश उपाध्याय छथि। उपलब्ध संस्करणमे संस्कृतसँ मैथिली रूपान्तरण, सम्पादन आ पुस्तक-विन्यासक श्रेय गजेन्द्र ठाकुरकें देल गेल अछि। एहि भिन्न भूमिकाकें एक संग मिला देब बौद्धिक इतिहासक गलती होयत। गङ्गेशक तर्करचना, आधुनिक मैथिलीमे ओकर व्याख्या, आ तकर अंग्रेजी प्रस्तुति—ई तीन स्तर एक-दोसरक सहायक होइतहुँ एकहि वस्तु नहि अछि। अनुवादकक उपलब्धि जाँचैत काल मूल दार्शनिक प्रतिज्ञाक वैधता अलग प्रश्न अछि; दार्शनिक मतक आलोचना कएनाइ अनुवादकक भाषिक परिश्रमक अवमूल्यन नहि।

एहि संस्करणक विषय-सूची छओ आरम्भिक अध्याय, प्रत्यक्ष, अनुमान, ईश्वरानुमान, उपमान आ शब्दक पाँच विस्तृत परिशिष्ट, एकटा अध्ययन-सहचर आ ग्रन्थसूची देखबैत अछि। मैथिली पाठक पाछाँ अंग्रेजीमे समान प्रकारक व्यापक सामग्री सेहो अछि। एहिसँ ई ग्रन्थ केवल एकटा अनुवाद-पुस्तकक रूपमे सीमित नहि रहि, अध्ययनार्थी लेल प्रवेशिका, तर्कपाठ, परिशिष्ट-संग्रह आ द्विभाषिक अध्ययन-साधन बनैत अछि। मुदा एकर विस्तार अपने आपमे प्रमाणित सम्पूर्णता अथवा पाठसमीक्षात्मक शुद्धताक प्रमाण नहि।

अध्ययनक कसौटी : पूर्वपक्ष, सिद्धान्त आ सीमाक त्रिकोण

दार्शनिक तर्ककें केवल ‘आचार्य कहैत छथि’ रूपमे प्रस्तुत कएल जाए तँ ओकर आलोचनात्मक सम्भावना नष्ट होइत अछि। एतय प्रत्येक प्रमुख प्रसङ्गमे तीन प्रश्न पूछल गेल अछि: पूर्वपक्ष ठीक कोन प्रतिज्ञा करैत अछि; उत्तरमे कोन हेतु, उदाहरण अथवा भेदक सहारा लेल गेल अछि; आ ओहि उत्तरक सत्यता कतेक अतिरिक्त मान्यतापर निर्भर अछि। ई कसौटी नव्य-न्यायक अपन परीक्षण-परम्परासँ मेल खाइत अछि। तर्कक औपचारिक संगति आ अनुभवजन्य सत्य अलग धरातल अछि—उदाहरणार्थ, सृष्टिक ‘कर्ता’ सम्बन्धी अनुमानमे कर्तृत्वक अनिवार्य व्याप्ति सिद्ध कएनाइ प्राथमिक आवश्यकता अछि।

अध्यायसभक दार्शनिक परिचय आ परिशिष्टसभक विस्तृत अनुवाद दू अलग पाठभूमि उपलब्ध करबैत अछि। परिचयमे विधा-शिक्षणक सुविधा लेल सङ्क्षेप, दृष्टान्त आ वर्तमानकालीन व्याख्या

अछि; परिशिष्टमे आपत्ति-समाधानक तकनीकी गति बेसी देखाइत अछि। आलोचना ओहि अन्तरकें सुरक्षित रखैत अछि। मैत्रीपूर्ण उदाहरण तखनहि सफल मानल जाएत जखन ओ मूल तर्कक अवच्छेदक, प्रतियोगी, साध्य आ हेतुकें गलत रूपें सरलीकृत नहि करय।

प्रथम समीक्षा : भूमिका आ दार्शनिक प्रस्तावना

मङ्गलवाद : कारण आ बाधा-दूर करबाक अन्तर

आरम्भिक विवेचनमे मङ्गलाचरणक फल 'ग्रन्थ-समाप्ति' मानबाक प्रस्तावक प्रतिपक्षमे 'विघ्नध्वंस' राखल गेल अछि। ई बदलाव मात्र धार्मिक औचित्यक फेरबदल नहि; कारणक प्रकारक सूक्ष्म भेद अछि। जे काज अन्तिम फल उत्पन्न करैत अछि आ जे काज प्रतिबन्धक हटबैत अछि, दुनूक कारणताक एके कसौटी पर नहि राखल जा सकैत अछि। उपलब्ध पाठमे मङ्गलाचरणक बिना ग्रन्थ समाप्त होयबाक आ मङ्गलाचरण भेलाक बादो ग्रन्थ अधूरा रहबाक अपवाद उल्लेखित अछि। अपवाद द्वारा सार्वत्रिक दावाक परीक्षण ई वादक आलोचनात्मक शक्ति अछि।

मुदा 'विघ्न नहि छल, तँ काज भेल' कहलाक बाद पुनः ई प्रमाणित करब आवश्यक रहैत अछि जे जहाँ विघ्न छल, ओतय ओकर नाश वास्तवमे मङ्गलाचरणक कारण भेल। केवल असफलताक अभावसँ सकारात्मक कारणता सिद्ध नहि होइत अछि। पाठ एतय नैयायिक कारण-चिन्तनक बारीक दुआर खोलैत अछि; आलोचनाक उचित निर्णय ई अछि जे उपायात्मक व्याख्या मूल आपत्तिकें टारैत अछि, सभ प्रकरणमे कारणता सिद्ध नहि करैत।

प्रामाण्यवाद : उत्पत्ति आ ज्ञाप्तिक भिन्न प्रश्न

मीमांसाक स्वतः प्रामाण्य आ नैयायिक परतः प्रामाण्यक चर्चा ज्ञानक सत्यता उत्पन्न होयबाक कारण तथा सत्यता जानल जाएबाक साधनकेँ भिन्न प्रश्न बनबैत अछि। उपलब्ध पाठमे नवीन ज्ञानपर संशय होयबाक अनुभवकेँ स्वतः प्रामाण्यवाद विरुद्ध उदाहरण बनाओल गेल अछि। एहि उदाहरणक प्रभाव अछि, मुदा स्वतः प्रामाण्यक सभ दार्शनिक रूपकेँ 'प्रत्येक ज्ञानपर पूर्ण निश्चितता' बुझि लेब विरोधीक सूक्ष्म मतकेँ कमजोर कऽ देत। ज्ञानक उत्पत्ति, सत्य होयब आ सत्यता ज्ञात होयब—ई तीन चरणक अन्तर लगातार निभाएब आवश्यक अछि।

प्रामाण्यक परतः ज्ञप्तिमे सफल प्रवृत्ति अथवा परवर्ती प्रमाणक उपयोग जखन होइत अछि, तखन नव समस्या बनैत अछि: परवर्ती ज्ञानक प्रामाण्य कोना ज्ञात होयत? अनवस्थाक आशंका वास्तविक अछि। अध्ययनमे एहि प्रश्नकेँ पराजित मतक त्रुटिक रूपमे मात्र नहि, नैयायिक

समाधानक परीक्षा-स्थल मानल गेल अछि। एहि कारणेँ एतय ज्ञानमीमांसा सिद्धान्तक अन्ध समर्थन नहि, परीक्षणक व्याकरण बनैत अछि।

भ्रम : सीप, चानी आ ज्ञानक विषयता

सीपमे चानीक प्रतीति वाला दृष्टान्तसँ प्रभाकरक भेदाग्रह आ नैयायिक अन्यथाख्याति अलग-अलग होइत अछि। पहिल व्याख्यामे प्रत्यक्ष आ स्मृतिक बीच भेदक ग्रहण नहि भेल; दोसरमे अनुपस्थित गुणक आरोपण प्रमुख अछि। उपलब्ध मैथिली विवेचनमे प्रत्यक्षक 'ई किछु अछि' आ स्मृतिक 'चानी' रूप अलग कएल गेल अछि, आ नैयायिक स्थितिमे रजतत्वक विशेषण-विषय सम्बन्धक चर्चा अछि। ई भेद पाठककेँ भ्रम मात्र गलत नामकरण नहि, ज्ञानक रचना सम्बन्धी विवाद बुझबैत अछि।

एहि दृष्टान्तमे सबसँ पैघ सावधानी ई अछि जे भ्रमक वर्णन आ भ्रमक व्याख्या एक नहि। भ्रमित व्यक्तिक प्रत्यक्ष अनुभवक वृत्तान्तसँ अपने आप नहि सिद्ध होइत अछि जे सैद्धान्तिक रूपेँ कतेक पृथक ज्ञानक्रिया उपस्थित रहैत अछि। पाठकक लाभ लेल एहि सीमाकेँ स्पष्ट करब मैथिली विवेचनक वैज्ञानिक विनम्रता बढ़बैत।

प्रमाणक संगठन आ भाषाक अनुशासन

भूमिका प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान आ शब्दक सम्बन्ध एक सतत प्रश्नसमूह रूपमे राखैत अछि। कोन ज्ञान सोझ इन्द्रियसँ, कोन अविनाभावक माध्यमसँ, कोन सादृश्य-आधारित पदबोधसँ आ कोन विश्वसनीय वाक्यसँ जन्मैत अछि—एहि अन्तरकेँ अस्पष्ट राखल जाए तँ प्रमाणसभक संख्या महज रूढ़ वर्गीकरण बनि जायत। मूल ग्रन्थक परिचयात्मक प्रसङ्ग एही संकटसँ बचबाक प्रयास करैत अछि।

अनुवादमे 'अधिकरण', 'अवच्छेदक', 'प्रतियोगी', 'निरूपकता' सन पद बचाएब उपयोगी अछि, कारण ओ संरचनात्मक काम करैत अछि। मुदा समान पद प्रत्येक प्रसङ्गमे एकहि अर्थ-सूत्रमे बन्हल रहय, ई शर्त आरो पैघ अछि। शास्त्रीय शब्दकेँ केवल कोष्ठकमे अंग्रेजी पर्याय जोड़ि देबासँ अवधारणा स्पष्ट नहि होइत; सम्बन्ध-रचना आ उपयुक्त प्रतिदृष्टान्त चाही।

द्वितीय समीक्षा : प्रत्यक्षखण्डक परिचय

प्रत्यक्षक रूपरेखा : इन्द्रियजन्य ज्ञानसँ व्यापक ज्ञानमीमांसा धरि

दोसरा अध्यायमे प्रत्यक्षक दार्शनिक परिप्रेक्ष्य, प्रामाण्य, भ्रम, सन्निकर्ष, समवाय, अभाव आ अनुव्यवसायक क्रम देखाइत अछि। एहि क्रमक विशेषता अछि जे प्रत्यक्षकें केवल ‘आँखिसँ देखब’ नहि मानल गेल। वस्तु, गुण, गुणक सम्बन्ध, अभावक ग्रहण आ अपन ज्ञानक ज्ञान—सभकें प्रत्यक्षक कसौटीपर आनल गेल अछि। एहन क्रम पाठककें बुझबैत अछि जे ज्ञानक स्रोतक परिभाषा वस्तुगतक वर्गीकरणसँ जुड़ल अछि।

तथापि प्रत्यक्षक विस्तारित क्षेत्रक संग- संग तकर सीमा सेहो निर्धारित करबाक आवश्यकता अछि। ‘अभाव देखब’ अथवा ‘समवाय जानब’ सन कथन अपनहि मे निष्कर्ष नहि; पहिने ई निर्धारित हो जे ज्ञानक वस्तु कोन प्रकारक अस्तित्वक दाबी करैत अछि। वैकल्पिक सिद्धान्तक प्रतिपक्षसँ तुलना बिना एकर सहजता भ्रामक भऽ सकैत अछि।

षड्विध सन्निकर्ष : सम्बन्धक रूपसम्भावना

प्रत्यक्षलक्षण आ सन्निकर्षवादमे सम्बन्ध केवल भौतिक स्पर्श नहि; द्रव्य-गुण आ व्यापक संरचनाक अलग स्तर स्वीकारल गेल अछि। इन्द्रिय आ वस्तुक सम्बन्ध कहबाक बाद ‘वस्तु’ जँ गुण, सामान्य अथवा अभाव हो, तँ सम्बन्धक मध्यवर्ती सूत्रकें निर्दिष्ट करब पड़ैत अछि। एहि कारणें सन्निकर्षक विभिन्न रूपक उल्लेख मूल दार्शनिक आवश्यकता पूरा करैत अछि।

व्याख्याक दुर्बलता तखन प्रकट होइत अछि जखन सूचीक नाम तऽ सुरक्षित रहैत अछि, मुदा प्रत्येक सम्बन्धक प्रत्यक्षज्ञान सम्भव बनबाक निर्णायक कारण नहि देखाओल जाइत। दृष्टान्तक स्तरपर ‘घटक रंग’ आ ‘घटत्व’क ग्रहणमे अन्तर्निहित भेद खोलब पाठक-अभ्यास लेल आवश्यक अछि।

अभावज्ञान : अनुपलब्धि वा प्रत्यक्ष

अभावक जिज्ञासा ‘जतय वस्तु नहि अछि, ओतय हम की जानैत छी?’ एहि प्रश्नमे सघन होइत अछि। प्रत्यक्षखण्डक परिचयमे अनुपलब्धिकें पृथक प्रमाण नहि मानबाक नैयायिक पक्ष सामने अबैत अछि। मुदा अभावजन्य निश्चय लेल योग्य स्थान, अपेक्षित वस्तु, ज्ञानक सामान्य

परिस्थिति आ वस्तुक अनुपस्थिति—सभक संयुक्त परीक्षा जरूरी अछि। खाली कोठलीमे घड़ा नहि देखनाइ आ अन्हारमे घड़ा नहि देखनाइ समान प्रमाण नहि।

एहि भेदक माध्यमसँ आधुनिक ज्ञानमीमांसाक ‘अनुपस्थित साक्ष्य’ सम्बन्धी प्रश्न खोलल जा सकैत अछि, मुदा प्राचीन सिद्धान्तकेँ आधुनिक प्रयोगशालाक अनुसन्धाने सिद्ध मानि लेब अनुचित। तुलना प्रश्न-विन्यासक रहत, ऐतिहासिक पहचानक नहि।

मनोऽणुत्व आ अनुव्यवसाय

पाठमे मनक अणुत्व, एक समयमे ज्ञानक अनुक्रम आ अनुव्यवसाय पर चर्चा अछि। मनकेँ सूक्ष्म द्रव्य मानबाक अवधारणा बहुविषयी अनुभवक क्रम समझबाक दार्शनिक प्रस्ताव अछि, आधुनिक तन्त्रिका-विज्ञानक स्थापित शारीरिक निष्कर्ष नहि। यही भेदक बिना ‘मनोविज्ञानक प्राचीन खोज’ सन प्रशंसात्मक वाक्य गम्भीर शोधकेँ कमजोर करैत।

अनुव्यवसायमे ‘हम जानैत छी जे हम जानैत छी’ सन द्वितीय-स्तरक आत्मज्ञानक प्रश्न उठैत अछि। एहि धाराकेँ केवल अन्तर्मुखी चेतना कहि देब पर्याप्त नहि; ज्ञानक विषय, ज्ञाताक स्थिति आ तकर प्रामाण्य फेर विश्लेषण माँगैत अछि।

तृतीय समीक्षा : अनुमानखण्डक परिचय

अनुमितिक कारण : व्याप्ति आ लिङ्गपरामर्श

तेसर अध्यायमे अनुमानक प्रक्रिया हेतु, साध्य, पक्ष, व्याप्ति आ परामर्शक सम्बन्धसँ बनैत अछि। ‘जतय धूम अछि ओतय अग्नि अछि’ आ ‘एहि पर्वतपर धूम अछि’ ई दू ज्ञान प्राप्त भेला पर जे संयुक्त रूपमे पर्वतपर अग्निबोध होइत अछि, ओकर कारणगत विवेचना एतय केन्द्रीय अछि। व्याप्ति मात्र सामान्य सहचार अछि कि उपाधिरहित सम्बन्ध—ई विवादसँ अनुमानक शक्ति निर्धारित होइत अछि।

एहि प्रसङ्गमे दृष्टान्तक शिक्षण-मूल्य पैघ अछि; मुदा ‘समस्त धूमक संग अग्नि’ नियमकें स्थापन कएनाइ, पक्षमे धूमक निश्चय आ व्याप्तिक प्रयोग तीन भिन्न काम अछि। हुनक बीचक अन्तर नहि राखल जाए तँ अनुमानकें केवल वाक्य-योजनाक अभ्यास बुझल जाएत।

व्याप्तिपञ्चक आ परिभाषाक परीक्षा

व्याप्तिक पाँच पूर्वपक्षीय लक्षणक क्रमिक परीक्षणमे नव्य-न्याय परिभाषात्मक सूक्ष्मताक असाधारण रूप देखबैत अछि। साध्याभावक अधिकरणमे हेतुक अवृत्ति जकाँ परिभाषा सामान्य नकारात्मक दृष्टान्तमे ठीक लगि सकैत अछि; मुदा केवलान्वयी स्थितिमे साध्यक अभावक स्थलहि नहिहँ भेटत। एहि सीमा-साक्ष्यक कारणें परिभाषा केवल परिचित उदाहरणक आधारपर सर्वमान्य नहि होइत।

पाठमे सिंह आ व्याघ्र नामसँ उल्लिखित वैकल्पिक लक्षणो पर प्रश्न उठैत अछि। एतय आलोचकक दायित्व हरेक परिभाषाक प्रतिज्ञा आ ओकर खण्डनक तार्किक रूप अलग राखब अछि। ‘कठिन शब्द’ अपने आपमे गहराइ नहि; परिभाषाक एक-एक अवच्छेदक प्रतिदृष्टान्त रोकेत अछि कि नहि, ई असल कसौटी अछि।

उपाधि : साध्यक व्यापक मुदा हेतुक नहि

अनुमानखण्डक परिचयमे भिजल काठक संयोगवला उदाहरणसँ ‘अग्नि अछि, तँ धूम अछि’ नियमक असार्वत्रिकता उद्घाटित होइत अछि। धूमक लेल केवल अग्नि पर्याप्त नहि; विशिष्ट सहायक परिस्थिति अपेक्षित भऽ सकैत अछि। एहि कारणें उपाधिक विचार अनुमानक विरुद्ध शत्रु नहि, ओकर शुद्धिकरणक साधन अछि।

निश्चित आ संदिग्ध उपाधिक भेद महत्त्वपूर्ण अछि। निश्चित उपाधि व्याप्तिक दाबीकेँ खण्डित कऽ सकैत अछि, जखन कि संदिग्ध उपाधि निश्चय स्थगित करबाक कारण बनैत अछि। दुनूकेँ एकहि ‘दोष’ शब्दसँ समेटल जाए तँ तार्किक प्रभावक स्तर गड़बड़ा जाइत अछि।

पक्षता, परामर्श आ प्रमाणाभाव

पक्षमात्र विषय होयबाक नाम नहि। साध्यक उपलब्धि, साधक प्रमाणक पूर्वस्थिति आ सिद्ध करबाक इच्छा—ई सभ पक्षताक विवेचनमे अबैत अछि। मीमांसकक मतमे व्याप्तिस्मरण आ पक्षधर्मताज्ञान पर्याप्त होयबाक पक्ष अछि, आ नैयायिक परामर्शकेँ असाधारण कारण मानैत छथि। ई वाद ज्ञानक्रियाक वास्तविक मध्यवर्ती अवस्था सिद्ध करबाक माँग करैत अछि।

मात्र सरलताक आधारपर परामर्श अस्वीकार कएनाइ आ ‘परामर्श अनिवार्य’ कहि कऽ समाप्त भऽ जाएब—दुनू अपर्याप्त। परामर्श अलग मानसिक घटना अछि कि दू पूर्वज्ञानक संयुक्त तर्करूप, एहि भेदकेँ उदाहरणसँ निर्णीत करबाक चाही। उपलब्ध पाठक उपस्थिति एहन विचारक लेल आधार उपलब्ध करबैत अछि।

अर्थापत्ति आ अनुमानक सीमारेखा

मीमांसक अर्थापत्तिकेँ स्वतंत्र प्रमाण मानैत छथि; नैयायिक ओकरा अनुमानमे समाहित करबाक प्रयत्न करैत छथि। देवदत्तक दिनमे नहि भोजन करितहुँ स्थूल होयबाक परिचित उदाहरण एहि बिन्दुपर उपयोगी भऽ सकैत अछि, मुदा महत्त्व वास्तविक प्रश्नमे अछि: विरोधाभासी प्रतीतिक समाधान ‘अनिवार्य मान्यता’ अछि वा पूर्वसिद्ध व्याप्तिपर आधारित अनुमान? ई निर्णय बिना विवाद शब्द-स्तरीय रहि जाएत।

एहि प्रकरणमे पूर्वपक्षक वास्तविक शक्ति स्वीकार करब अनिवार्य अछि। कोनो मनुष्य अनुपस्थित कारणक कल्पना किएक करैत अछि, तकर मनोवैज्ञानिक चित्रण पर्याप्त नहि; प्रमाणशास्त्रीय आवश्यकता आ तार्किक रूप निर्धारित करबाक चाही।

हेत्वाभास : दोषसभक व्यवस्थित वर्गीकरण

अध्यायमे विरुद्ध, सत्प्रतिपक्ष, असिद्ध आ आन हेत्वाभासक प्रसङ्ग अछि। ई केवल परीक्षा-पुस्तिकाक सूची नहि, न्याय-वाक्यक आत्म-परीक्षणक साधन अछि। हेतु साध्यक विपरीत सिद्ध

करैत अछि कि नहि; समान बलवला प्रतिहेतु प्रस्तुत अछि कि नहि; पक्षमे हेतु स्वयं सिद्ध भेल अछि कि नहि—प्रत्येक प्रश्न अलग निष्कर्ष दैत अछि।

अनुवादमे ई वर्गसभक संस्कृत नाम सुरक्षित राखब श्रेष्ठ अछि। मुदा ‘असिद्ध’क अनेक रूपकें एकहि असफलता मानि लेब तकनीकी हानि करैत; पक्षधर्मता, आश्रय आ व्यापकत्वक अवयव अलग राखल जाए।

चतुर्थ समीक्षा : ईश्वरानुमानक परिचय

क्षित्यादिकं सकर्तृकम् : दृष्टान्तक शक्ति आ जोखिम

चौथा अध्याय पृथिवी आदि सकर्तृक अछि—एहि प्रतिज्ञाक कारण ‘कार्यत्व’ आ उदाहरण घटक उपयोग दर्शबैत अछि। पंचावयवी न्याय-वाक्यक अनुक्रम पाठककेँ तर्कक रूप सोझाँ रखैत अछि। मुदा घट मनुष्यद्वारा बनाओल दृश्य वस्तु अछि; समस्त जगत ओहिसँ समान कोटिक कार्य अछि कि नहि, ई अलग प्रमाण माँगैत अछि। दृष्टान्त ज्ञात कर्तृत्वसँ अज्ञात कर्तृत्व धरि जाइत काल कोन समानता वैध अछि, एहि प्रश्नकेँ नजरअन्दाज नहि कएल जा सकैत अछि।

कृतिक उपलब्धि ई अछि जे उदयन-गङ्गेश परम्पराक ईश्वरविमर्शकेँ तर्कक ऐतिहासिक विषय रूपमे उपलब्ध करबैत अछि। समीक्षा एकरा दार्शनिक युक्तिक रूपमे परखैत अछि, प्रमाणित ब्रह्माण्डविज्ञानक रूपमे नहि।

देहविहीन कर्तृत्वक आपत्ति

माटिक घटक उदाहरणमे देहधारी कारीगरक क्रिया ज्ञानातीत ईश्वरक कर्तृत्व सिद्ध करबाक लेल पर्याप्त अछि कि नहि—ई वादक निर्णायक बिन्दु अछि। तर्कमे ‘कर्तृत्व’क व्याप्ति जँ अनुभूत कर्तृत्वपर टिकल हो, तँ देहरहित कर्तृत्वक सम्भावना सिद्ध करबाक लेल अतिरिक्त सिद्धान्त आवश्यक अछि। पाठमे अशरीरी ईश्वर शब्द-संकेत कोना देलनि, एहन प्रश्नो उठैत अछि।

ई आपत्ति आ प्रतिवादकेँ एकहि पृष्ठपर राखबाक महत्त्व अछि: ईश्वरक निष्कर्ष पहिनेसँ निश्चित मानि प्रतिहेतुकेँ उपेक्षित कएनाइ नव्य-न्यायक वाद-विन्यासक विपरीत होयत। पाठक तर्कक शक्ति आ तकर मान्यताक सीमा दुनू बुझय।

दाहशक्ति : गुण, कारण आ प्रतिबन्धकाभाव

दाहशक्तिक विवादमे अग्नि जलएबाक सामर्थ्य पृथक सत्ता अछि कि अनुकूल कारण-सामग्री आ प्रतिबन्धकक अभावसँ परिणाम समझल जा सकैत अछि—ई प्रश्न उठैत अछि। जादुई अथवा अदृश्य गुणक घोषणा करबाक स्थानपर कार्यकारण-सम्बन्धक स्पष्ट अवयव चाही। पाठमे शक्ति आ प्रतिबन्धकाभावक भिन्न व्याख्या एक महत्वपूर्ण सैद्धान्तिक विकल्प प्रस्तुत करैत अछि।

नव्य-न्यायक लाघव सिद्धान्तक उपयोग एतय सूक्ष्मतासँ करबाक चाही। कम सत्ता मानल जाए से मात्र सत्यक गारंटी नहि; जँ कम मान्यतासँ सभ दृष्टान्त सही समझल जाए तँ ओ व्याख्या बेहतर ठहरि सकैत अछि।

पुरुषार्थ, तत्त्वज्ञान आ मोक्ष

ईश्वरानुमानक पाछाँ पुरुषार्थवादक विस्तृत चर्चा पाठककेँ दर्शबैत अछि जे ज्ञानमीमांसा अन्ततः मनुष्यक दुःखमुक्तिक प्रश्नसँ जुड़ैत अछि। तत्त्वज्ञानकेँ केवल वर्णनात्मक सत्य नहि, दुःखक हेतु हटएबाक माध्यम बुझल गेल अछि। एहि ठाम मोक्षकेँ नित्य सुख, दुःखक अभाव, कर्मक्षय आ ज्ञानक सम्बन्धसँ अलग-अलग परखल गेल अछि।

मुदा मुक्तिक शास्त्रीय संकल्पनाकेँ आधुनिक चिकित्सकीय अथवा सामाजिक सुखक मानकसँ एकदम तुल्य नहि मानल जा सकैत अछि। दार्शनिक आदर्शक आ जीवन-व्यवहारक अन्तर बुझेबाक संग शास्त्रीय मतक ऐतिहासिक परिस्थिति सुरक्षित राखब उचित।

पंचम समीक्षा : उपमानखण्डक परिचय

गवय-दृष्टान्त : नाम आ वस्तुक सम्बन्ध

उपमानक केन्द्रीय समस्या परिचित गाय आ अपरिचित गवयक सादृश्यसँ ‘गवय’ शब्दक वाच्यार्थ कोना निश्चित होइत अछि, से अछि। केवल समानता देखनाइ आ ‘ई गवय थिक’ जानब एकहि प्रक्रिया नहि। पहिने सुनल वर्णन, पाछाँ देखल अपरिचित जीव आ स्मृतिमे उपस्थित सम्बन्ध—ई सभ मिलि कऽ विशिष्ट ज्ञान उत्पन्न करैत अछि।

ई व्याख्या अनुवादकक लेल विशेष महत्त्वपूर्ण अछि, कारण तर्कक शब्द-विषय स्वयं भाषिक समतुल्यताक प्रश्न खोलैत अछि। समान वस्तु नहि, समान लक्षणसँ नाम सीखबाक प्रक्रियाकेँ स्पष्ट करबाक चाही।

सादृश्यक सत्ता : एक सामान्य कि अनेक सम्बन्ध

पाठमे सादृश्यकेँ सामान्य अथवा जाति मानबाक प्रयास, एक अथवा अनेक सादृश्यक प्रश्न आ धर्मसमष्टिक विवेचना अछि। ‘समान’ कहल जाएब तखनहि अर्थवान् अछि जखन तुलना ककरा ककरासँ, कोन गुणक आधारपर, कोन परिमाण धरि कएल जा रहल अछि, ई स्पष्ट हो। दू वस्तु अनेक धर्म साझा करितहुँ अन्य निर्णायक धर्ममे भिन्न भऽ सकैत अछि।

एहि कारणेँ सादृश्यक तात्त्विक विश्लेषण केवल उपमानक एक उदाहरणक व्याख्या नहि, वर्गीकरण आ अर्थनिर्णयक प्रश्न अछि। अनुवादमे ‘सादृश्य’क साथे ‘समानता’ सहज पर्यायसँ चलब कखनो उपयुक्त अछि, मुदा दार्शनिक सम्बन्धक स्थानपर साधारण मिलान राखलासँ सूक्ष्मता नष्ट होइत अछि।

प्राच्य नैयायिक आ मीमांसकसँ विवाद

उपमान स्वतंत्र प्रमाण अछि कि स्मृति, अनुमान अथवा अर्थापत्तिक सँयोगमात्र, एहि विवादमे प्रतिपक्षक मतक वास्तविक पुनर्निर्माण जरूरी अछि। उपलब्ध परिचयमे कुमारिल, प्राचीन नैयायिक आ अन्य मतक उल्लेख अछि। एतय समीक्षा प्रभावी तखन होइत अछि जखन प्रत्येक पक्षक मानल फल—सादृश्यज्ञान, पद-पदार्थसम्बन्ध अथवा विसादृश्यज्ञान—अलग राखल जाए।

केवल ककर मत 'खण्डित' भेल, ताहिसँ बेसी महत्त्व ई अछि जे खण्डन कोन असफल उदाहरण पर आधारित अछि। गदहाक दृष्टान्त एही परीक्षणक एकटा रूप अछि।

उपदेशवाक्य आ सर्वनामक शक्ति

उपमानकें केवल गवय-दृष्टान्तमे सीमित करब मूल प्रकरणक आधा अध्ययन होयत। उपदेशवाक्य, स्मरण, लक्षणा, अनुमान आ सर्वनामक शक्ति सम्बन्धी चर्चा नामकरणक ज्ञानसँ वाक्यगत सम्बन्धबोध धरि पसरैत अछि। एहि विस्तारमे भाषाक सामाजिक व्यवहार आ तार्किक विभेदन जुड़ैत अछि।

जँ शब्दक शक्ति पहिनेसँ ज्ञात अछि, तखन उपमान नव कोन ज्ञान दैत अछि? जँ शक्ति ज्ञात नहि, तखन उपदेशक आधारपर विशिष्ट वस्तु पहिचान कोना सम्भव? एहि दू प्रश्नक स्पष्ट उत्तर उपमानक स्वतन्त्रता सिद्ध करबाक केन्द्रीय शर्त अछि।

षष्ठ समीक्षा : शब्दखण्डक परिचय

शब्दप्रमाण : वक्ता, वाक्य आ विश्वसनीयता

छठम अध्यायमे शब्दप्रमाण प्रत्यक्ष आ अनुमानसँ अलग मानल जाएबाक कारण जाँचल गेल अछि। ‘अमुक वाक्य सुनलहुँ’ आ ‘वाक्यसँ सत्य ज्ञान भेल’ एक नहि। वक्ताक योग्यता, पदसभक आपसी सम्बन्ध, श्रोताक पूर्वज्ञान आ वाक्यार्थक परिस्थिति—ई सभ शाब्दज्ञानक निर्माण करैत अछि।

वेदक प्रामाण्य सम्बन्धी विवाद सामान्य भाषाक उदाहरणसँ एकाएक धार्मिक अधिकारक प्रश्नमे जाइत अछि। एतय वर्णनात्मक भाषाशास्त्र आ मान्यतामूलक धर्मदर्शनक सीमा अलग राखब आवश्यक अछि।

आकाङ्क्षा, योग्यता, आसत्ति आ तात्पर्य

शाब्दबोधक शर्तमे आकाङ्क्षा पदसभक परस्पर अपेक्षा, योग्यता अर्थक संभाव्य संगति, आसत्ति पदसम्बन्धक समीपता आ तात्पर्य वक्ता अथवा पाठक सन्दर्भक दिशा खोलैत अछि। एक पदक अर्थ ज्ञात रहितहुँ वाक्यक अर्थ नहि बनि सकैत अछि, कारण वाक्य केवल शब्दसभक ढेरी नहि।

मैथिलीमे ई प्रकरण विशेष उपयोगी अछि। विभक्ति, क्रियापद, वाच्य आ प्रसङ्गक फेरबदलसँ अर्थ बदलैत अछि। मुदा भाषिक अनुभवक शिक्षण लेल नूतन काल्पनिक उदाहरण देल जाए तँ ओकरा मूल शास्त्रीय उद्धरण कहि कऽ प्रस्तुत नहि करब; स्रोत-पाठ आ समीक्षकक उदाहरण स्पष्ट रूपेँ अलग रहय।

तात्पर्य आ अपौरुषेय वाक्यक प्रश्न

शब्दखण्डमे वक्ताक अभिप्रायकेँ शाब्दज्ञानक आवश्यक शर्त मानल जाए कि नहि, एहि निर्णयक वेदक अपौरुषेयतासँ विशेष सम्बन्ध अछि। जँ हरेक वाक्यमे देहधारी वक्ताक तात्पर्य अनिवार्य मानल जाए, तँ वेदक पारम्परिक स्थितिपर आपत्ति अबैत अछि; जँ तात्पर्य नहिँ मानल जाए, तँ विडम्बना, अनर्थबोध आ सन्दर्भक भूमिका अस्पष्ट भऽ सकैत अछि।

एहि विवादक उपयोग शुद्ध तर्कगत अछि। वेदक ऐतिहासिक मूल, श्रुति-परम्पराक विकास आ संस्थागत अभिलेखक प्रश्न स्वतंत्र ऐतिहासिक शोध चाहैत अछि; दर्शनक अनुमानकें इतिहासक प्रत्यक्ष प्रमाणक स्थान नहि देल जाए।

विधिवाद आ अपूर्वक सम्बन्ध

विधिवाक्यक अर्थ केवल क्रियाक आज्ञा अछि अथवा विशिष्ट फलसँ प्रेरित मानसिक प्रवृत्ति, एहि प्रश्नसँ क्रिया, इच्छा, कर्तृत्व आ ‘अपूर्व’क विवाद जुड़ैत अछि। मीमांसकक अप्रत्यक्ष फल-सम्बन्ध समझएबाक प्रयास आ नैयायिकक लाघवप्रधान प्रतिवाद दुनूकें तर्कसंगत ढङ्गसँ राखब आवश्यक।

अनुवादमे ‘अपूर्व’क सहज पर्याय खोजि ओकरा साधारण ‘नव फल’ बना देब जोखिमपूर्ण। ई पद विशिष्ट कारणात्मक मध्यवर्ती सत्ता अथवा अदृष्ट सम्बन्धक प्रस्ताव अछि। ओकर दार्शनिक भूमिका खुलबाक चाही, शब्दार्थमात्र नहि।

जातिशक्ति, योगरूढ़ि, समास आ आख्यात

पाठमे शक्ति जातिमे कि व्यक्तिमे, योगरूढ़ि संज्ञाक अर्थ कोना तय करैत अछि, समासमे पदसम्बन्धक रूप की अछि, आ आख्यातक प्रत्यय क्रिया, कर्ता वा प्रयत्न कोना सूचित करैत अछि—एहन परस्पर जुड़ल बहस अछि। ई खण्ड मिथिलाक व्याकरणिक परम्परा आ नव्य-न्यायक बीच वास्तविक सम्पर्क स्थापित करबाक आधार अछि।

सामान्य भाषाशास्त्रक संग तुलना करैत काल ‘भाषाविज्ञान पहिने सँ सिद्ध छल’ सन सरलीकरणसँ बचब जरूरी। प्रश्नसाम्यक संग सिद्धान्तक प्रयोजन, प्रमाण आ ऐतिहासिक शब्दार्थमे भेद सुरक्षित रहय।

सप्तम समीक्षा : प्रत्यक्षखण्डक विस्तृत परिशिष्ट

प्रारम्भिक प्रकरण आ मङ्गलवादक पुनर्विस्तार

प्रत्यक्षक विस्तृत अनुवादमे मङ्गलवाद केवल प्रारम्भिक प्रेरणा नहि; अनेक आपत्तिक सूक्ष्म पुनरावृत्ति अछि। पाठक एतय देखैत छथि जे पूर्वपक्षीय प्रस्ताव, ओकर संभावित बचाव आ उत्तरक बाद फेर नव आपत्ति उठि सकैत अछि। ई वाद-शैली आधुनिक निबन्धक एकमात्र सीधा तर्कसँ भिन्न अछि।

अनुवादकक प्रभावी निर्णय एहि पदानुक्रमकेँ अलग परिच्छेद आ संकेतशीर्षकसँ बुझैबाक अछि। तथापि परिच्छेदक विस्तारक संग वक्ताक चिन्हांकन हरदम स्पष्ट रहबाक चाही; अन्यथा पाठक कुन वाक्य पूर्वपक्ष अछि आ कुन सिद्धान्त, तकर निर्णय गलत कऽ सकैत छथि।

प्रामाण्यक कारण-सामग्री आ ज्ञानक फल

परिशिष्टमे ज्ञानक यथार्थता आ अयथार्थताक उत्पत्तिपर बहुतेक सूक्ष्म तर्क अछि। कारणगुण, दोष, परवर्ती संशय, सफल प्रवृत्ति आ अपेक्षित वस्तुक प्रामाण्य जकाँ प्रश्न अलग-अलग धरि जाइत अछि। दार्शनिक उपलब्धि ज्ञानक सत्यताकेँ व्यक्तिक मनक निश्चितता मात्र नहि बनएबामे अछि।

अनुवादक परिचयक अपेक्षा एतय पैघ वाक्य, तकनीकी निषेध आ प्रतिपक्षी परिभाषा सुरक्षित राखैत छथि। एहि कठिनाईक समाधान अनिवार्य रूपसँ शब्द हटएब नहि; पदसमूहक पुनर्व्यवस्था, छोटे व्याख्यानोट आ पूर्वपक्षक दृश्य विभाजन अधिक उपयुक्त।

अभावक प्रतियोगिता आ अधिकरण

नव्य-न्यायमे अभावक कथन 'किछु नहि अछि' सँ पूरा नहि होइत। ककर अभाव अछि, कोन अधिकरणमे अछि, प्रतियोगी ककरा कहल जाए आ अभावक अवच्छेदक की अछि—ई सभ स्पष्ट करबाक चाही। प्रत्यक्षक परिशिष्टमे एहि सूक्ष्म संरचनाक बहु रूप देखाइत अछि।

एहि विश्लेषणक नैतिक उपयोग सेहो अछि: प्रमाणक अभाव आ अभावक प्रमाणकेँ एकहि नकारात्मक वाक्य नहि मानब। मुदा एहि आधुनिक उपयोगकेँ केवल समीक्षकक तुलनात्मक सम्भावना मानल जाए, मूल पाठक इतिहास-वक्तव्य नहि।

सुवर्ण, वायु आ पदार्थमीमांसा

अनुवादमे सुवर्णक तैजसत्व, वायुक अप्रत्यक्षता आ पदार्थक वर्गीकरणक चर्चा अबैत अछि। एतय न्याय-वैशेषिकक पदार्थसूचीक अन्तर्गत कएल गेल निष्कर्षकें आधुनिक रसायन अथवा भौतिकी-सिद्ध सत्य मानब अनुचित। स्वर्णक आधुनिक रासायनिक पहचान आ शास्त्रीय 'तैजस' वर्गक व्यावहारिक प्रयोजन भिन्न अछि।

वास्तविक साहित्यिक उपलब्धि एहि क्षेत्रमे अछि जे मैथिली गद्य शास्त्रीय तत्त्वमीमांसाक कोटिक भाषिक अनुशासन सम्भालैत अछि। तर्कक ऐतिहासिक मूल्याङ्कन ओकर अपन मान्यताक आधार पर, वैज्ञानिक तथ्यक मूल्याङ्कन वर्तमान प्रमाणक आधार पर कएल जायत।

निर्विकल्पक-सविकल्पक आ प्रत्यक्षक अन्तिम प्रश्न

परिशिष्टक अन्तिम अंशमे निर्विकल्पक आ सविकल्पक ज्ञानक भेद प्रत्यक्षक परिभाषापर फेर लौटैत अछि। 'वस्तु देखब' आ 'वस्तुकें अमुक गुणयुक्त कहल जाएब' क सम्बन्ध विषय-विशेष्यक संग एकत्र होइत अछि। ई खण्ड संपूर्ण प्रत्यक्षविमर्शक संगठनात्मक समापन करैत अछि।

पाठमे परिभाषा, आपत्ति आ खण्डनक बाहुल्य अछि। विमर्शक निष्ठा लेल अनुवादक जँ प्रत्येक 'नहि'क दायरा स्पष्ट राखथि, तँ पाठक निरसनक सटीक लक्ष्य देखत; ई दायरा अस्पष्ट भेलापर अवांछित विपरीत अर्थ बनि सकैत अछि।

अष्टम समीक्षा : अनुमानखण्डक विस्तृत परिशिष्ट

व्याप्तिक अनेक लक्षण आ तकनीकी प्रतिदृष्टान्त

अनुमानक दीर्घ परिशिष्टमे व्याप्तिक संकल्पना अनेक परिभाषात्मक दौर पार करैत अछि। अधिकरण, साध्याभाव, हेत्ववृत्ति आ प्रतियोगिताक सम्बन्धक पृथक सूत्र बनाएल गेल अछि। प्रत्येक वैकल्पिक लक्षणकें एक खास प्रतिदृष्टान्तपर परखल गेल अछि; केवल परिचित धूम-अग्नि दृष्टान्तसँ एहि पाठक सघनता बुझल नहि जा सकैत अछि।

ई खण्ड पढ़बाक उत्कृष्ट पद्धति लक्षणक कथन, ओकर अनिवार्य मान्यता, प्रतिदृष्टान्त आ संशोधित लक्षणकें चार खण्डमे देखब अछि। एकर अभावमे ‘पाँच लक्षण खण्डित भेल’ सन कथन परिणाम तँ कहत, दार्शनिक प्रक्रिया नहि।

उपाधि आ अव्यभिचार : परिभाषा कठिन किएक

उपाधिक कारण हेतुक संग साध्यक नित्य सम्बन्धक अभाव देखल जाइत अछि। परिशिष्टमे उपाधिक व्यापकता, तकर दूषक रूप आ व्याप्ति-ग्रहणमे प्रासङ्गिक शंका विस्तारसँ अछि। ‘शर्त’ शब्द एकर प्रवेशद्वार भऽ सकैत अछि, मुदा तकनीकी अर्थमे उपाधि हरेक बाहरी शर्त नहि; साध्यव्यापकता आ हेत्वव्यापकताक विशिष्ट असमानता निर्णायक।

दर्शनशिक्षणक दृष्टिसँ ई एकटा उपयोगी स्थान अछि जतय अनुवादक प्रत्येक नवीन पदक पहिल प्रयोग पर उपयुक्त तार्किक नमूना देथि। परिशिष्टमे मूल तर्क सुरक्षित राखनाइ प्राथमिक अछि, मुदा शास्त्रीय शुद्धता आ बोधगम्यता एक-दोसरक विरोधी नहि।

पक्षताक सम्भाव्य परिभाषासभ

पक्षता परिशिष्टमे ‘साध्यज्ञानेच्छा’, ‘साधक प्रमाणाभाव’ आ ‘बाधक प्रमाण’ सन विषयक परिभाषात्मक विवाद अछि। एहि प्रसङ्गक मूल्य ई अछि जे साध्यकें सिद्ध करबाक क्रियाक पृष्ठभूमि स्वयं प्रमाणक जाँचक विषय बनैत अछि। कोनो पक्ष कहैत छी तकरा मात्र स्थानसूचक द्रव्य नहि, ज्ञानक परिस्थिति सेहो बुझल जाए।

एहि विवेचनक कठिनाई विशेषतः निषेधसमूहमे अबैत अछि। ‘दुनू प्रमाणक अभाव’ आ ‘दुनूमेसँ एकक अभाव’ अलग कथन छथि; भाषामे संयोगक एकटा चूक तर्कक निष्कर्ष उलटि सकैत अछि। ई स्थान भाषिक प्रूफरीडिंगक अनिवार्य केन्द्र मानबाक चाही।

केवलान्वयी, केवलव्यतिरेकी आ अर्थापत्ति

परिशिष्टमे केवलान्वयी हेतु, विपक्ष-अभाव आ केवलव्यतिरेकी अनुमानक अनुप्रयोग पाठककें अनुमानक सामान्य प्रतिरूपसँ आगे लैत अछि। ई तर्कका एकहि ढंग सभ मामलामे लागू नहि होइत; साध्यक अभाव उपलब्ध नहि रहला पर नकारात्मक परीक्षणक सम्भावना बदलैत अछि।

मीमांसकक अर्थापत्तिपक्षकें एहि तर्कक प्रतिपक्षमे राखल गेल अछि। गंभीर समीक्षा लेल अर्थापत्ति उदाहरणमे अनुमानक व्याप्ति स्पष्ट रूपेँ निर्मित होइत अछि कि बादमे बनाओल जाइत अछि, ई भेद विशेष मूल्यवान् अछि।

न्यायवाक्यक अवयव आ तर्कशिक्षा

न्यायवाक्यक प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय आ निगमन पाठमे शिक्षणक एक पृथक स्तर अछि। एहि पाँच अवयवसँ दाबी सार्वजनिक रूपमे जाँचबाक पद्धति बनैत अछि; श्रोता केवल वक्ताक अधिकार नहि, कारणक वैधता परखि सकैत अछि।

तथापि पाँच वाक्यक उपस्थितिमात्रसँ अनुमान सही नहि होइत। धूमक उपस्थितिमे भ्रम, व्याप्तिमे उपाधि, अथवा प्रतिहेतुक उपस्थितिमे सुन्दर क्रमबद्ध तर्को असफल होयत। ई चेतावनी नव्य-न्यायक आत्मालोचनात्मक विशेषता अछि।

हेत्वाभास आ बाधान्तक समापन

अनुमानखण्डक अन्तिम विस्तार विरुद्ध, असिद्ध, सत्प्रतिपक्ष, बाधित आ आन दोषसभक परिवर्ती सीमा तक जाइत अछि। अपन प्रतिज्ञाक विरोधमे उपस्थित ज्ञानकें स्वीकार नहि करब ‘सिद्धान्तक रक्षा’ नहि, प्रमाणक अस्वीकृति अछि। नव्य-न्याय जतय बाधक प्रमाणक भूमिका स्पष्ट करैत अछि, ओतय ओकर ऐतिहासिक बौद्धिक ताकत देखाइत अछि।

अन्तिम समापनकेँ केवल दार्शनिक विजयक घोषणा नहि मानल जाए। परिशिष्टक विस्तृत आत्मपरीक्षण देखबैत अछि जे ककरो मत खण्डित करब लेल प्रतिपक्षी सम्भावना ठीकसँ बुझब आवश्यक अछि।

नवम समीक्षा : ईश्वरानुमानक विस्तृत परिशिष्ट

विषयक निर्धारण : ईश्वरानुमानमे पक्ष के अछि

दीर्घ ईश्वरानुमानमे ‘पृथिवी आदि’ जकाँ व्यापक विषयनिर्देश अपना आपमे गम्भीर कठिनाई उत्पन्न करैत अछि। पक्ष अवच्छिन्न अछि कि नहि; भिन्न-भिन्न उत्पादित वस्तु पर एकहि हेतु लागू होयत कि नहि; ज्ञात मनुष्यनिर्मित वस्तुक तुलनासँ ब्रह्माण्डक कर्तृत्व सिद्ध करब कोन स्तरक विस्तार अछि—ई सभ प्रारम्भिक आपत्ति बनैत अछि।

एहि ग्रन्थमे एहन आपत्तिक विस्तारक महत्व ई अछि जे तर्कक पक्ष स्थापना स्वयं प्रमाणभार सँ मुक्त नहि। धार्मिक निष्कर्ष रखबाक पहिने प्रश्नक ठीक विषय ठहरएब आवश्यक अछि।

कर्तृत्व, देह आ कार्यत्वक व्याप्ति

कर्तृत्वक सामान्य नियम दैनन्दिन अनुभवमे देह, उपकरण, इच्छा आ प्रयाससँ जुड़ैत अछि। ईश्वरानुमानमे ई सामान्य अनुभव देहविहीन सर्वज्ञ कर्ता धरि बढ़ाओल जा रहल अछि। ई संक्रमण ‘घट जकाँ’ कहि देबासँ सम्पन्न नहि। जँ कार्यत्वक परिभाषा एहन राखल जाए जाहिमे कर्तृत्व पहिनेसँ घुसल हो, तँ अनुमेय निष्कर्ष पूर्वधारणामे समाहित भऽ जाएत।

परिशिष्टक सम्पूर्ण वादमे एहि आशंकाक प्रतिवाद आ प्रत्युत्तर चलैत अछि। समीक्षक लेल ई मिथिलाक दार्शनिक विवादक सबसँ उपयोगी भागसभमे अछि, किएक तँ आस्थाक विषयपर सेहो तर्कक प्रमाणभारक माँग हटाओल नहि गेल।

वेद, शब्द-संकेत आ सृष्टिचक्र

अशरीरी ईश्वर वेद आ लौकिक शब्दक संकेत स्थापित कोना करैत छथि, एहि आपत्तिसँ ईश्वरानुमान शब्दप्रमाणक क्षेत्रमे प्रवेश करैत अछि। महाप्रलयक कल्पना आ वेदक प्रसारण-सम्बन्धी तर्क जँ मानल गेल, तँ ओ दर्शनक अपन पूर्वधारणा पर आधारित अछि। ओकरा स्वतंत्र ऐतिहासिक दस्तावेज नहि मानल जा सकैत अछि।

एहि एकहि उदाहरणमे दर्शन, धर्म आ भाषाक परस्पर सीमा स्पष्ट होइत अछि। संकेतक सामाजिक व्यवहारक मुद्दा अनिवार्य अछि; ओकर उत्तरकेँ केवल सृष्टिकर्तृत्वक प्रतिज्ञासँ समाप्त करब पर्याप्त नहि।

प्रतिबन्धकाभाव आ दाहशक्ति-विवादक दीर्घ रूप

दाहशक्तिक प्रकरण विस्तृत अनुवादमे दोहराकऽ अबैत अछि, आ कारणक सहायक अवस्था, संस्कार, प्रतिबन्धक तथा कालपर अनेक जटिल आपत्ति अछि। एहि पुनरागमनक अर्थ निरर्थक दोहराव नहि; पूर्व सिद्धान्तकें नूतन परिस्थिति पर आजमाएब अछि। मुदा सम्पादकीय स्तरपर समान शीर्षक फेर आयलासँ पाठककें प्रसङ्ग-निरन्तरता देखेबाक उपाय आवश्यक अछि।

शक्ति-स्वरूपपर विकल्पक आलोचना जँ काम करैत अछि तँ जादुई कारण-कल्पनाक संख्या घटैत अछि; मुदा इएह विकल्प सभ देखल परिणामक हिसाब रखैत अछि कि नहि, ओकर जाँच शेष रहैत अछि।

दुःखाभाव, कर्मक्षय आ तत्त्वज्ञान

पुरुषार्थवादक दीर्घ खण्डमे मुक्ति ककर अभाव, ककर उपलब्धि, आ ज्ञान तथा कर्मक सम्बन्धसँ कोना सम्भव, एहि पर क्रमशः चर्चा अछि। ‘दुःख नहि रहब’ आ ‘सदैव सुख रहब’ समान लक्ष्य नहि। ई भेद आध्यात्मिक अवस्थाक अवधारणा तय करैत अछि।

कर्मक विनाश भोगद्वारा होइत अछि कि तत्त्वज्ञानक मध्यवर्ती क्रिया सेहो अछि, ई प्रश्न परिशिष्टक अन्तिम भागमे तत्त्वज्ञानक व्यावहारिक परिणाम चाहैत अछि। ई नैतिक जीवनक कठिन प्रश्न अछि, मुदा बाह्य व्यवहार-प्रमाणक अभावमे एकरा प्रयोगसिद्ध परिणाम कहब नहि बनैत।

दशम समीक्षा : उपमानखण्डक विस्तृत परिशिष्ट

सादृश्यक सामान्यत्वक खण्डन

उपमानक विस्तृत भाग सादृश्यकें एकटा सामान्य धर्म मानबाक अनेक विकल्पक परीक्षा करैत अछि। साझा गुणक संख्या बढ़लासँ सामान्यताक निष्कर्ष अपने आप बनैत नहि; विषयसभक परस्पर सम्बन्ध आ तुलना-आधारक प्रकार बदलैत अछि। पाठमे एक सादृश्य अथवा अनेक सादृश्यक समस्या बारम्बार उठैत अछि।

एहि सूक्ष्मताक कारण जँ अनुवादक साधारण ‘एकर जकाँ’ कहि कऽ तकनीकी चर्चा समेटि देथि तँ मूल तर्कक वस्तु हरायल जायत। ओही संग पाठककें आवश्यकतानुसार साधारण अर्थक सीढ़ी देब जरूरी अछि।

गवय, गदहा आ विपरीत तुलना

गवय—गायक सादृश्य, गदहासँ विसादृश्य आ पद—अर्थसम्बन्धक भिन्न दृष्टान्त उपमानक प्रमाणत्व परखैत अछि। विसादृश्य जानलाक बाद उपमानक फल बदलैत अछि कि नहि, ई प्रश्न एक प्रमाणक सीमारेखा खोलैत अछि। केवल नया जीवकें देखि नाम सीखब नहि, सुनल वर्णन आ दृष्ट पदार्थक मेलक प्रकार विवादक केन्द्र अछि।

अनेक उदाहरणक उपस्थिति पाठकें दार्शनिक अर्थमे उर्वर बनबैत अछि; तथापि ‘फल’ शब्द कोन ज्ञान लेल प्रयुक्त अछि, ई प्रत्येक प्रकरणमे स्थिर राखब अनिवार्य।

उपमिति बनाम अनुमान आ अर्थापत्ति

उपमानकें अनुमानमे समेटबाक प्रस्ताव तँ आकर्षक अछि जे दुनूमे एक ज्ञात सम्बन्धसँ नूतन ज्ञान भेटैत अछि। मुदा उपमानक समर्थक दावा करैत छथि जे विशेष सम्बन्ध-बोधकें पूर्वसिद्ध व्याप्ति धरि घटाओल नहि जा सकैत। एहि खण्डक आलोचनामे प्रश्न ई अछि जे रूपान्तरित अनुमानक हेतु वास्तवमे पाठमे पूर्वगृहीत अछि कि व्याख्याकार बादमे जोड़ैत छथि।

अर्थापत्ति सम्बन्धी प्रतिद्वन्द्वी परिभाषाक परीक्षण सेहो आवश्यक अछि। विरोधक नाम गिनएब पर्याप्त नहि; प्रत्येक प्रतिपक्षक स्वीकृत ज्ञानफल आ ओकर उत्पत्तिक अवस्था पहचानल जाए।

सर्वनाम, शक्ति आ शब्दार्थक प्रवेशद्वार

उपमानक अन्तिम प्रसङ्ग सर्वनाम आ विशिष्ट पदशक्तिक माध्यमसँ शब्दखण्डक दिशा खोलैत अछि। गवयत्वमे ‘गवय’ पदक शक्ति मानल जाए तँ ज्ञानक परिणाम केवल वस्तु-चिन्हन नहि, भाषिक संज्ञाक स्थापन होइत अछि।

ई स्थान ग्रन्थक रचनात्मक संगतिक सुन्दर उदाहरण अछि—उपमान समाप्त होइत-होइत शब्दप्रमाणक समस्या उपस्थित करैत अछि। मुदा एकर ऐतिहासिक महत्त्व दार्शनिक ग्रन्थक आन्तरिक रचनामे अछि, आधुनिक शब्द-अर्जन सिद्धान्तक सीधा पूर्वरूप घोषित करबामे नहि।

एकादश समीक्षा : शब्दखण्डक विस्तृत परिशिष्ट

वाक्यार्थक चार शर्त आ प्रसङ्ग

शब्दखण्डक विस्तृत अनुवाद शाब्दबोधक आकाङ्क्षा, योग्यता, आसत्ति आ तात्पर्यक अनेक प्रतिस्पर्धी व्याख्या पर विस्तारसँ जाइत अछि। ‘केवल शब्द सुनब’ आ ‘वाक्यार्थ प्राप्त होयब’क अन्तर ई चर्चा बोधगम्य करैत अछि। व्याकरणिक सम्बन्ध, सन्दर्भ, वक्तृ-अभिप्राय आ श्रोता-ज्ञानक सीमा एका जगह देखाइत अछि।

अनुवादक लेल ई अध्ययन स्वयं अनुवादक कलाक मानदण्ड बनैत अछि: पदक पृथक समतुल्य मिल गेलाक बादो वाक्यक दार्शनिक अर्थ बदल सकैत अछि। तकनीकी निषेध आ सम्बन्धसूचक अव्ययक सावधानी सर्वोपरि अछि।

वेदक पौरुषेयत्व आ अपौरुषेयत्व

वेदक लेखकक प्रश्नपर न्याय आ मीमांसाक विवादमे निरन्तर परम्परा, महाप्रलय आ वाक्यक प्रामाण्य अलग-अलग तर्करूपमे अबैत अछि। ई बहसकेँ धार्मिक मतभेद कहि कऽ खारिज कएनाइ ओकर ज्ञानमीमांसीय जटिलताकेँ नष्ट करैत। शास्त्रीय पक्षक भीतर प्रमाण आ प्रतिप्रमाणक दावा अछि।

मुदा वेदक ऐतिहासिक उत्पत्ति सन्दर्भमे दार्शनिक विश्वकल्पनाक निष्कर्ष स्वतंत्र पाठालोचन, भाषा-इतिहास अथवा पुरातात्विक साक्ष्यक पर्याय नहि। एहि भेदक सम्यक् प्रस्तुति शोधक विश्वसनीयता बनाए रखैत अछि।

विधिवाक्य, संस्कार आ फलोत्पत्ति

विधिवादमे कर्मक नियमन, इच्छाक उत्पत्ति आ अनागत फलसँ सम्बन्ध स्थापित करबाक अनेक प्रकार अछि। अपूर्वक पक्ष भविष्यफल आ वर्तमान कर्मक बीच अदृष्ट सम्बन्ध राखैत अछि; प्रतिपक्ष ई सम्बन्धक अतिरिक्त स्वीकृतिपर आपत्ति करैत अछि। सैद्धान्तिक विवाद मापनयोग्य कारण-सिद्धान्त जकाँ नहि, शास्त्रीय कर्ममीमांसा जकाँ पढ़ल जाए।

परिशिष्टमे पवित्रीकरण, छिड़काव, संस्कारक परिणाम आ भविष्यफल सम्बन्धी जटिल उदाहरण अछि। एहि उदाहरणसभमे ‘कारण’क शास्त्रीय अर्थ आ भौतिक कारणक आधुनिक अर्थ भिन्न राखल जाए, अन्यथा ऐतिहासिक सिद्धान्तक अनावश्यक वैज्ञानिक दाबी बनि जायत।

पदार्थशक्ति : जाति, व्यक्ति आ योगरूढ़ि

शब्दक अर्थ व्यक्तिमे अछि, जातिमे अछि कि विशेष योगरूढ़ सम्बन्धमे, एहि पर तर्कक अनेक चरण अछि। ‘पङ्कज’ जकाँ पदमे व्युत्पत्ति आ प्रचलित रूढ़ अर्थक अन्तर दार्शनिक समस्या बनैत अछि। एहि चर्चा सँ अर्थव्यवस्था केवल कोशीय अर्थ नहि, व्यवहार आ परम्पराक सम्बन्ध घोषित होइत अछि।

मैथिली अनुवादमे एकहि पारिभाषिक पद अलग प्रकरणमे एकरूप राखब कठिन, मुदा एहि कठिनाईकेँ शब्दकोश बनाकऽ कम कएल जा सकैत अछि। तकनीकी पद बदलबासँ मूल तर्कक पक्ष-परिवर्तनक आशंका अछि।

समासक अर्थ आ गौण लक्षणा

समास, द्वन्द्व, बहुव्रीहि आ लक्षणाक सम्बन्ध शब्दखण्डमे स्वातन्त्र्यपूर्वक चर्चा पबैत अछि। पदक मुख्य अर्थ पर्याप्त रहैत अछि कि संयुक्त पदसमूहक संबंधबोध लेल गौण अर्थ आवश्यक, ई विवाद भाषा-विश्लेषणक गहिर प्रश्न अछि।

किछु स्थान पर पूर्वपक्ष ‘लक्षणा आवश्यक’ कहैत अछि, दोसर स्थानमे ‘लक्षणा आवश्यक नहि’ प्रतिवाद अछि। ई शीर्षकसभ पाठककेँ विपरीत लागय, मुदा वास्तविक वादक क्रम अछि। सम्पादकीय प्रस्तुति जँ वक्तासूचक पद छोड़ि देत तँ असत्य अन्तर्विरोध बनि जायत।

आख्यात, क्रिया आ कर्तृत्व

शब्दखण्डक अन्तिम विस्तार आख्यात प्रत्ययक अर्थ प्रयत्न, क्रिया, कर्ता अथवा कालसँ कोना जुड़ैत अछि, एहि पर केन्द्रित अछि। ‘पचति’ जकाँ रूपक व्याकरणक चर्चा प्रत्यक्ष दैनन्दिन भाषा सँ जुड़ैत अछि, मुदा वाद केवल क्रियारूप पहचानबाक नहि, अर्थघटनाक सीमाक अछि।

पदक रूप आ कथित क्रियाक प्रयत्नक अन्तर अनुवादमे विशेष सावधानी माँगैत अछि। अंग्रेजी finite verb क रचना जँ सीधे अपन वाक्यविन्यास थोपत तँ मैथिली व्याकरणक विशेषता हेराइ सकैत अछि।

शब्दप्रमाणक समापन : संकेत आ स्मरण

शाब्दबोधक अन्तिम तर्कमे इशारा, लिखित चिह्न आ वाचिक वाक्यक प्रमाणत्वक अन्तर पुनः उठैत अछि। संकेत अर्थदेता अछि कि शब्दस्मृतिक साधन, ई विभाजन शाब्द ज्ञानक स्रोत निर्धारित करैत अछि। ई मतक आधुनिक सङ्केतविज्ञानसँ तुलना कएल जा सकैत अछि, मुदा समानता कहला मात्रसँ दूनू सिद्धान्तक ऐतिहासिक एकरूपता सिद्ध नहि।

अन्तिम प्रसङ्ग भाषाक सामाजिक व्यवहार आ अर्थक नियमबद्धताक बीच एक कायम तनाव देखबैत अछि। एहि तनावकें हटाएब नहि, स्पष्ट करब रूपान्तरक आलोचनात्मक सफलता अछि।

द्वादश समीक्षा : अध्ययन-सहचर आ द्विभाषिक संरचना

अध्ययन-सहचरक उपादेयता आ संरचनात्मक सीमा

परिशिष्ट ६ मूल पुस्तकक परिचय आ अनुवाद-भागसँ प्रमुख दार्शनिक वाक्य, परिभाषा आ अध्ययन-इकाई एकत्र करैत अछि। विद्यार्थी लेल एहन सहचर उपयोगी अछि: मूल प्रसङ्ग, अनुवादक व्याख्या आ अध्ययनक पुनरावृत्ति एके ग्रन्थमे भेटैत अछि। मूल अनुक्रममे अध्याय १ लेल २१५, अध्याय २ लेल २०, अध्याय ३ लेल ३३, अध्याय ४ लेल २७, अध्याय ५ लेल ४६ आ अध्याय ६ लेल १८ मूल वाक्य/सूत्रक संख्या उल्लिखित अछि; पाँच परिशिष्ट लेल क्रमशः ३२९, २००, २७०, ६६ आ २५५ संख्या देल अछि। ई संख्या पुस्तकक आन्तरिक सूचीपर आधारित अछि, मूल संस्कृत सूत्रगणनाक स्वतन्त्र सत्यापन नहि।

अध्ययन-सहचर प्रमाणक सुविधा बनबाक संग एक जोखिमो आनैत अछि: मूल वादक क्रमसँ निकालल छोट वाक्य अपन पूर्वपक्ष वा उत्तरक प्रसङ्ग गमाबि सकैत अछि। तें सहचरक सूत्रकें अन्तिम उद्धरणस्रोत नमानि, सम्बन्धित मूल प्रकरण धरि वापस जाएब चाही।

मैथिली आ अंग्रेजी : दू माध्यम, एकरूप नहि

मूल फाइलक पछिला अंशमे ‘Chapter 1’ सँ ‘Chapter 6’ आ ‘Appendix 1’ सँ ‘Appendix 5’ धरि अंग्रेजी प्रस्तुति देल गेल अछि। अंग्रेजी अनुक्रम मैथिली अनुक्रमक विषयगत समतुल्य अछि। एहि कारणें अनुवादक योगदानक आलोचना केवल मैथिलीक भाषा-शुद्धता पर सीमित नहि रहि, परिभाषा आ सिद्धान्तक दू भाषामे निर्वाहक परीक्षा बनैत अछि।

मात्र शीर्षक-साम्य पूर्ण वाक्यगत समानता सिद्ध नहि करैत। ‘प्रमाण’ कें context बिना ‘proof’, ‘evidence’ अथवा ‘means of valid cognition’ कहब अलग दार्शनिक अर्थ पैदा करैत अछि। एहि संस्करणमे बहुतेक ठाम पारिभाषिक पदक रोमन रूप सुरक्षित देखाइत अछि; एहि निर्णयक बल अछि जे शास्त्रीय पदक खोज-पहिचान बचैत अछि।

पूर्वपक्षक वाचकत्व : अनुवादक विश्वसनीयता

लम्बा शास्त्रार्थमे विरोधीक कथन, सिद्धान्तीक उत्तर, पुनरुत्थित आपत्ति आ वैकल्पिक मत लगातार बदलैत अछि। मैथिली आ अंग्रेजी दुनूमे एहि वक्ता-परिवर्तनकें स्पष्ट रखब शब्दशः

समानार्थसँ बेसी जरूरी भऽ सकैत अछि। ‘नहि’ अथवा ‘अथवा’ जकाँ छोट अव्ययक गलत सम्बन्ध पूराएक प्रतिज्ञा उलटि सकैत अछि।

एहि कारणें मूल संस्कृतक आलोचनात्मक संस्करणक संग पादपाठीय मिलान कएने बिना ‘शतप्रतिशत मूल-निष्ठ’ कहब नहि बनैत। उपलब्ध फाइल मूल लेखक आ अनुवादकक नाम जनबैत अछि, मुदा वैकल्पिक संस्कृत पाठभेदक निर्णायक उपकरण अपनैँ नहि दैत। ई सीमा अध्ययनक प्रमाण-सीमा अछि, दोषारोपण नहि।

लिपि, पारिभाषिक शब्द आ अनुक्रम-सामञ्जस्य

‘व्याप्ति’, ‘उपाधि’, ‘अवच्छेदक’, ‘प्रतियोगी’, ‘सन्निकर्ष’, ‘तात्पर्य’, ‘आकाङ्क्षा’ सन पदक स्थिर लिपि जरूरी अछि। अलग-अलग प्रसङ्गमे योजक अथवा स्वरचिह्नक परिवर्तन केवल टंकणीय नहि, शब्दानुक्रमणिका आ शोध-उद्धरणक समस्या उत्पन्न करैत अछि। मैथिली लिपिक अपन रूपक संग मूल संस्कृत उद्धरण सुरक्षित रहय—दुनू एकसाथ सम्भव अछि।

अंग्रेजीमे IAST रोमनाक्षरक प्रयोग सहायक अछि, मुदा एक समान पदक अनेक लिप्यन्तरण बिन कारण बनि गेल तँ खोजनीयता घटत। भविष्यक आलोचनात्मक संस्करणमे द्विभाषिक पारिभाषिक अनुक्रम आ खण्ड-सूचक प्रत्यक्ष कड़ी अत्यन्त उपयोगी होयत।

त्रयोदश समीक्षा : द्विभाषिक पाठक सूक्ष्म परीक्षण

मङ्गलवाद : फल-सम्बन्धी पदक प्रत्यक्ष मिलान

मैथिली आरम्भमे ‘ग्रन्थ-समाप्ति’ आ ‘विघ्न-नाश’क विकल्प राखल गेल अछि; अंग्रेजी आरम्भ ‘completion of the work’ आ ‘destruction of obstacles’क माध्यमसँ ओही द्वन्द्व प्रस्तुत करैत अछि। ई चयन अर्थरूपेँ समीप अछि आ तर्कक अनिवार्य अन्तर बनौने रखैत अछि। विशेषतः ‘फल’ मात्र outcome नहि; युक्तिक अनुक्रममे कार्यक प्रत्यक्ष फल आ प्रतिबन्धक-नाशक मध्यवर्ती फल अलग। अंग्रेजी ‘result’ पढ़बाक समय एहि कारण-श्रेणी पर ध्यान आवश्यक अछि।

मैथिली परिचयक ‘विघ्नध्वंस’ एकटा संस्कृत तकनीकी संज्ञा रूपमे सुरक्षित अछि; अंग्रेजीमे ‘destruction of obstacles’ व्याख्यात्मक रूप दैत अछि। दूनूकें जोड़ी कऽ पढ़ला पर अनुवादक पाठक-सुगमता आ शास्त्रीय पद-संरक्षणक बीच उपयोगी सन्तुलन निर्मित करैत छथि। मुदा सम्बन्ध-विन्यासक बादक प्रसङ्गमे एहि एकरूपताक लगातार परीक्षण अपेक्षित अछि।

प्रत्यक्षक ‘ज्ञान’ आ अंग्रेजी cognition

दोसरा अध्यायक मैथिली शीर्षकमे ‘ज्ञान, प्रत्यक्ष आ भ्रमक विश्लेषण’ अछि; अंग्रेजी शीर्षकमे ‘Cognition, Perception, and Illusion’ रूप भेटैत अछि। ‘ज्ञान’क लेल cognition चयन एतय उचित अछि, कारण चर्चा ज्ञानक यथार्थता मात्र नहि, ज्ञानरूपी अवस्थाक उत्पत्ति आ संरचना सेहो करैत अछि। जँ प्रत्येक ठाम knowledge प्रयोग होइत तँ मिथ्या-ज्ञान, संशय आ मानसिक प्रक्रिया पर विवाद असहज बनि सकैत छल।

तथापि cognition आ knowledge सर्वथा एकार्थक नहि। न्याय-मीमांसाक प्रामाण्य-विवादमे सत्य-ज्ञानक मूल्याङ्कन अलग बिन्दु अछि। एकर फल ई जे पारिभाषिक अनुक्रममे ‘ज्ञान’क प्रसङ्गानुसार प्रयोगक सीमा लिखब आवश्यक, स्थायी यान्त्रिक विकल्प नहि।

अवच्छेदक-अवच्छिन्न आ delimiter-delimited

प्रत्यक्षक परिचयमे मैथिली ‘अवच्छेदक, अवच्छिन्न, प्रतियोगिता आ निरूपकता’ सन पद प्रस्तुत अछि। अंग्रेजी प्रतिरूपमे ‘delimiter, delimited, counterpositiveness, and

determinership' देल गेल अछि। एहि जोड़ीसँ स्पष्ट होइत अछि जे अनुवाद मात्र ध्वन्यात्मक रोमन रूपान्तरण नहि, विश्लेषणात्मक अवधारणाक अंग्रेजी नाम खोजबाक चेष्टा अछि। ई प्रयास प्रभावी अछि कारण अन्तरराष्ट्रीय पाठक सम्बन्धनिर्माणक तर्कगत काम पकड़ि सकैत छथि।

मुदा 'अवच्छेदक'क अर्थ भौतिक सीमा नहि; कोन सम्बन्ध वा प्रतियोगिताकेँ कोन धर्म सीमाबद्ध करैत अछि, ई तर्कनिष्ठ दायरा अछि। समानरूपेँ अंग्रेजी 'counterpositiveness' जकाँ अपेक्षाकृत अनौपचारिक शब्दक प्रथम प्रयोगमे मूल संस्कृत पदो देल जाए तँ शोधक पक्षमे अस्पष्टता घटत।

अनुमानक 'अनुमिति' आ inferential cognition

तेसर अध्यायकेँ अंग्रेजीमे 'Introduction to the Inference Section' कहल गेल, जखन कि मैथिली भीतर 'अनुमिति, व्याप्ति आ तर्कक संरचना' विशिष्ट विषय अछि। अंग्रेजी उपशीर्षक 'Inferential Cognition, Pervasion, and Reasoning' एहि तीन स्तरकेँ अलग राखैत अछि। ई मत-निर्वाहक महत्त्वपूर्ण सफलता अछि; अनुमान प्रमाण-विधि होइत अछि, अनुमिति ताहिसँ उत्पन्न ज्ञान।

परिशिष्ट २क आरम्भमे 'अनुमितिक निरूपण' अंग्रेजी 'Exposition of Inferential Cognition' अछि। एतय सेहो श्रेणीगत भेद बचल अछि। मुदा 'पर्वतपर धूम' सन उदाहरणमे परामर्शक बोधकेँ यदि अंग्रेजीमे केवल inference कहि देल जाए तँ मध्यवर्ती ज्ञान-घटना ओझर भऽ जाएत। ताहि लेल विस्तृत पारिभाषिक अनुक्रम अनिवार्य सन्दर्भ बनेत।

व्याप्ति आ pervasionक संकेतार्थ

अनुमान परिचयक शीर्षकमे 'व्याप्ति' अंग्रेजी 'pervasion'सँ प्रस्तुत अछि। ई पाश्चात्य न्याय-चर्चामे प्रचलित उपयोगी विकल्प हो सकैत अछि, मुदा सामान्य अंग्रेजी पाठक 'pervasion'केँ स्थानिक व्याप्ति बुझि सकैत छथि। न्यायमे हेतुक साध्यसँ तर्कगत अविनाभाव तथा उपाधिरहित सम्बन्ध केन्द्रीय अछि; स्थानक फैलाव नहि।

मैथिलीमे व्याप्तिक अर्थ एकहि ठाम 'अव्यभिचार' आ दोसर ठाम 'अनुपाधिक सम्बन्ध'सँ विशद होइत अछि। अंग्रेजी बोधक लेल bare translationक संग अनिवार्य सम्बन्धक विवरण देल जाए, तखन अर्थ अधिक सुनिश्चित रहत।

ईश्वरानुमान : inference of God कि proof of God

चौथा अध्यायक मैथिली शीर्षक 'ईश्वरानुमानक परिचय' अंग्रेजीमे 'Introduction to the Inference of God' भेल अछि। 'Inference'क चयन 'Proof'क अपेक्षा अधिक संतुलित अछि। एतय मूल पाठ एक प्रस्तावित अनुमानक तर्क-संरचना जाँचैत अछि; ओकर प्रमाणित निष्कर्ष मानि आगाँ बढ़ब ई अध्यायक प्रतिपक्षी बहसक संग न्याय नहि करत।

मैथिली आरम्भमे 'केन्द्रमे आस्था-आधारित प्रतिपादन नहि' रहैत अछि आ अंग्रेजीमे तकर समतुल्य विधान अछि। एहि आत्म-वर्णनक वास्तविक परीक्षा कर्तृत्वक व्याप्ति, देहविहीन कर्ता आ उपाधिक आपत्ति स्वीकार करबाक तर्क-प्रविधिमे होएत। शास्त्रार्थक रूपमे तर्क होयब निष्कर्षक विज्ञानसिद्ध होयबाक पर्याय नहि।

'पृथिवी आदि सकर्तृक' : हेतु-साध्यक सावधानी

ईश्वरानुमानक विस्तृत मैथिली आरम्भमे 'पृथिवी आदि सकर्तृक अछि, कार्य होयबाक कारणें, घट जकाँ' वाक्य अछि; अंग्रेजी परिशिष्ट 'Earth and the other things have an agent'सँ आरम्भ करैत अछि। 'सकर्तृक' केँ 'have an agent' करबाक लाभ अछि जे कर्तृत्व केन्द्रीय रहैत अछि, परन्तु 'agent' अंग्रेजीमे तत्काल मानवीय क्रियाकर्ताक धारणा सेहो उत्पन्न कऽ सकैत अछि।

जँ साध्य सामान्य कर्तृत्वक स्थिति अछि, तँ निष्कर्षमे तत्क्षण सर्वज्ञ अशरीरी ईश्वरक विशेष धर्म जोड़ब अतिरिक्त तर्क चाहैत अछि। दूनू भाषा एही अन्तरपर एकसमान स्पष्टता माँगैत अछि।

उपमान : comparison आ शब्दार्थग्रहण

पाँचम अध्यायक मैथिली विषय 'सादृश्य आ शब्दार्थ-ग्रहण' अंग्रेजीमे 'Similarity and the Apprehension of Word-Meaning' अछि। 'उपमान'क लेल Comparison उपयोग व्यापक पहुँच दैत अछि, मुदा न्याय-दर्शनमे केवल दुइ वस्तु मिलान करबाक नाम उपमान नहि। विशेष नाम आ अपरिचित पदार्थक सम्बन्धजन्य ज्ञानक दाबी अछि।

अंग्रेजी परिचयमे गवयक समझाबय लेल ‘wild ox’ पद भेटैत अछि। ई पाठकक जीव-परिचयक सुविधा अछि, पर मूल ‘गवय’ सेहो साथ राखब उत्तम होयत। गवयक स्थानपर आन आधुनिक प्राणी-नाम रखलासँ उदाहरणक सामाजिक परिस्थिति आ नाम-अर्जनक विशिष्ट प्रश्न बदलि सकैत अछि।

शब्दखण्ड : verbal testimonyक तात्पर्य

छठम अध्यायक अंग्रेजी नाम ‘Verbal Testimony Section’ अछि। ई चयन ‘शब्द’क साधारण lexical अर्थक अपेक्षा न्यायीय प्रमाणशास्त्रकें बेहतर स्पष्ट करैत अछि। मुदा अंग्रेजी ‘testimony’ सुनितहि पाठक प्रत्यक्ष मानवीय साक्षीक कल्पना करि सकैत छथि, जखन कि मूल शब्दखण्ड वेदक प्रामाण्य, अनामिक उच्चारण, समास, पदशक्ति आ आख्यात धरि विस्तार पबैत अछि।

तैं तकनीकी प्रयोगमे Verbal Testimony परिचयक उचित शीर्षक रहितहुँ परिशिष्टमे śabda-pramāṇaक रोमन पद राखलासँ प्रमाणक व्यापक अर्थ सुरक्षित होइत। दूनू रूप एक-दोसरकें पूरक बनाबय, प्रतियोगी नहि।

शब्द-वाक्य आ English sentence-meaning

मैथिली ‘वाक्यार्थ’ अंग्रेजी ‘sentence-meaning’क संग बारम्बार भेटैत अछि। एहि विकल्पमे शास्त्रीय पदक आङ्गिक अर्थ ठीकसँ पहुँचल अछि, मुदा ‘वाक्यार्थ’ केवल एक sentenceक dictionary composite नहि; आकाङ्क्षा, योग्यता, आसक्ति आ तात्पर्यक अन्तःसम्बन्धक फल अछि।

मैथिली क्रिया-रचना आ अंग्रेजी वाक्यविन्यास भिन्न होयबाक कारण शाब्दिक समान क्रम राखला परो वाक्यबोध बदलि सकैत अछि। तैं मूल शब्दखण्डक उदाहरणक तुलना करते काल पदानुक्रम, विभक्ति आ निषेधक scope स्पष्ट राखब निर्णायक अछि।

संस्करणक अंग्रेजी लेखक-श्रेय आ प्रकाशन-व्यवस्था

अंग्रेजी प्रकाशन-पृष्ठ पर ‘Original Sanskrit: Gangeśa Upādhyāya’ आ ‘Sanskrit-to-Maithili translation: Gajendra Thakur’ अछि, जखन कि पाछाँ ‘Complete English Translation’ शीर्षक अंतर्गत पर्याप्त पाठ देल गेल अछि। एहि कारणें अंग्रेजी

अनुवादकक पृथक श्रेय स्पष्टतासँ निर्धारित करबाक आवश्यकता प्रतीत होइत अछि। उपलब्ध फाइल अंग्रेजी पाठ उपस्थित होयबाक प्रमाण दैत अछि, पर माथापृष्ठक ‘Sanskrit-to-Maithili’ विवरण मात्र अंग्रेजी अनुवादकक निश्चयात्मक नामकरण नहि करैत।

ई सम्पादकीय सम्भावना आलोचनात्मक आरोप नहि। जकरा अधिकार आ दायित्व स्वीकृत अछि, प्रकाशनक अगिला संस्करणमे ओहि रूपेँ स्पष्ट उल्लेख होयत तँ शोध-उद्धरण, पुस्तकालय सूचीकरण आ अनुवादक-इतिहासक सुविधा बढ़त।

द्विभाषिक परीक्षणक समेकित निर्णय

चयनित शीर्षक, प्रारम्भिक अनुच्छेद, प्रमुख तकनीकी पद आ परिशिष्ट १-३क पहिल पाठक तुलना विषयगत समन्वयक अनेक पुष्ट उदाहरण दैत अछि। एहि निरीक्षणक आधारपर सभ ५.९ लाख शब्दक वाक्यवार अचूकता प्रमाणित भेल कहब उचित नहि। शेष दीर्घ अनुच्छेद, संस्कृत पाठभेद आ समासार्थक परीक्षणक लेल पृथक सङ्गतिपत्रक आवश्यकता रहत।

द्विभाषिक संस्करणक वास्तविक विशिष्टता ई अछि जे मैथिलीकेँ केवल मध्यवर्ती बोली नहि, स्वतन्त्र दार्शनिक गद्यक माध्यम मानल गेल अछि। एहि उपलब्धिक सर्वाधिक विश्वसनीय रक्षा उत्साही प्रशंसासँ नहि, निश्चल पारिभाषिक अनुशासन आ अनुवादक कठिन प्रश्नसभकेँ सटीक रूपमे उजागर करबासँ होएत।

चतुर्दश समीक्षा : समेकित दार्शनिक निर्णय

प्रत्यक्षसँ शब्द धरि प्रमाणसभक परस्पर परीक्षा

पाँचू प्रमुख खण्डक सम्बन्धमे कृतिक सर्वाधिक पैघ उपलब्धि ज्ञानक स्वतन्त्र स्रोतसभक सीमारेखा पर निरन्तर प्रश्न उठाएब अछि। प्रत्यक्षक वस्तुनिष्ठता, अनुमानक व्याप्ति, उपमानक पद-पदार्थ सम्बन्ध आ शब्दक विश्वसनीयता अलग विषय जकाँ दिखैत अछि, मुदा एक प्रमाणक मान्यता दोसरमे बड़प्पनसँ लौटैत अछि। उदाहरणार्थ, अनुमानक व्याप्ति आखिर कोना ज्ञात भेल, शब्दक प्रामाण्यक जाँच ककरा माध्यमसँ होएत, ई प्रश्न प्रमाणसभकें पारस्परिक परीक्षणमे रखैत अछि।

एहि कारणें ग्रन्थक रचना केवल विषय-सूची अनुसार पाँच डब्बामे नहि बँटैत। ई एक बौद्धिक जाल अछि जाहिमे प्रत्येक संकल्पना दोसर संकल्पनाक सीमा जाँचैत अछि। गजेन्द्र ठाकुरक रूपान्तर एहि जालकें मैथिली पाठकधरि पहुँचएबाक उपयोगी भाषिक आधार तैयार करैत अछि।

परिभाषाक सौन्दर्य आ तर्कक कठिनाई

नव्य-न्यायक परिभाषा बारम्बार अवच्छेदक जोड़ि कऽ सामान्य प्रतिदृष्टान्त रोकैत अछि। एहि प्रक्रियामे बौद्धिक सौन्दर्य अछि—एक छोट दोषसँ परिभाषा बदलैत अछि, फेर नव दोषसँ ओ आरो सूक्ष्म बनैत अछि। मुदा अत्यधिक शर्तसभक कारण अर्थबोध कठिन होइत अछि। ई कठिनाईकें नकारात्मक मूल्याङ्कन नहि, अनुवादकक औचित्य-संकट बुझबाक चाही।

सुगम अनुवाद लेल तर्कक सूचना घटाएब अनुचित; शास्त्रीय निष्ठाक लेल पाठककें एकदम निर्बोध कठिन वाक्यमे छोड़ि देब सेहो अनुचित। प्रमुख पदक स्थायी अर्थ, छोटे उदाहरण, पार्श्व टिप्पणी आ स्पष्ट विरोधी-वक्ता एहि द्वन्द्वक व्यावहारिक समाधान छथि।

विदेह समानान्तर इतिहास-दृष्टि

मिथिलाक न्यायपरम्पराक क्षेत्रीय पहचान एहि कृतिक साहित्यिक अर्थक एक अंश अछि, मुदा तर्कक वैधता क्षेत्रीय गौरवसँ सिद्ध नहि होइत। समानान्तर इतिहास-दृष्टि तखन प्रभावी बनैत अछि जखन स्थानीय ज्ञान-भाषाकें बौद्धिक केन्द्र बनबैत ऐतिहासिक प्रमाणक आवश्यकता सेहो स्वीकार कएल जाए। मैथिलीमे नव्य-न्यायक विस्तृत प्रस्तुति भाषाक बौद्धिक विस्तारक उदाहरण अछि; एकरा स्वयं इतिहासक अंतिम निर्णायक स्रोत मानल नहि जा सकैत अछि।

लोकभाषा आ शास्त्रभाषाक सम्बन्धो एकतरफा नहि। पारिभाषिक कठोरता लोकभाषाक सम्भावना बढबैत अछि, आ लोकभाषाक व्याख्यात्मक विविधता शास्त्रक अनकहल धारणाकें प्रश्नक केन्द्रमे आनैत अछि।

मूल लेखकीय योगदान आ अनुवादक अवदानक अलग निर्णय

गङ्गेशक मौलिक दर्शनक सम्बन्धमे समीक्षा प्रतिज्ञा-प्रमाण-प्रतिकल्पनासँ तर्कक संरचना जाँचैत अछि। गजेन्द्र ठाकुरक अनुवादक-सम्पादकीय योगदानक सम्बन्धमे प्रश्न भाषा, विन्यास, पारिभाषिक अनुशासन, पाठकधरि पहुँच, द्विभाषिक प्रस्तुति आ आलोचनात्मक उपकरणक उपलब्धताक अछि। दुनूक प्रशंसा वा आपत्ति दू अलग कारणसँ होयबाक चाही।

एहि संस्करणक विस्तार अध्ययनक सुविधा आ सम्पादकीय साहस देखबैत अछि। संगहि विस्तृत पुनरागमन, उत्तरार्द्धमे समान सामग्रीक अंग्रेजी प्रस्तुति आ गहन पारिभाषिक घनत्वक कारण सुस्पष्ट खण्डानुक्रम, पाठभेद-सूची आ सूत्राधारित अनुक्रमक अभाव अधिक अनुभव होइत अछि। एहि अपेक्षाकें लक्ष्य करब कृतिक महत्त्व घटाएब नहि, ओकर शोधोपयोगिता बढाएबाक दिशा अछि।

पाठान्तर-सत्यापनक शेष आवश्यकता

उपलब्ध DOCXसँ मैथिली आ अंग्रेजी सामग्रीक विषयगत उपस्थिति, प्रस्तावित अनुक्रम आ अनेक दार्शनिक तर्कक निरन्तरता प्रमाणित होइत अछि। मुदा मूल संस्कृतक स्वतंत्र कूटपाठ, पाण्डुलिपि-परम्पराक पाठभेद, संस्करणविशेषक सम्पूर्ण संगति आ ग्रन्थसूचीक बाह्य पुस्तकालय-प्रमाणीकरण एहि अध्ययनक स्रोतमे स्वतंत्र रूपसँ उपस्थित नहि। तँ ओहि विषयपर अन्तिम निर्णायक दावा करब प्रमाणनीतिक विरुद्ध होयत।

वास्तविक निष्कर्ष ई अछि जे तत्त्वचिन्तामणिक मैथिली-अंग्रेजी प्रसारणक ई रूप बौद्धिक पहुँचक महत्त्वपूर्ण प्रयास अछि; ओकर आलोचनात्मक परिपूर्णता लेल पारिभाषिक एकरूपता, स्रोत-स्तरक स्पष्टता, संस्कृत पाठ-मिलान आ समीक्षा-योग्य पादटिप्पणी-व्यवस्था आवश्यक रहत।

उपसंहार : जिज्ञासा, प्रतिपक्ष आ प्रमाण

एहि कृतिक मूल बल किसी एक सिद्धान्तपर अचल विश्वास नहि, बल्कि सिद्धान्तक पूर्वपक्षीय चुनौती स्वीकार करबाक कठोर बौद्धिक रीति अछि। प्रत्यक्ष अपन सीमा पूछैत अछि; अनुमान अपन व्याप्ति जाँचैत अछि; ईश्वरानुमान अपन विषयक वैधता प्रश्नक आगौं रखैत अछि; उपमान शब्दार्थक जन्मक प्रमाण खोजैत अछि; शब्दखण्ड वाक्य, आशय आ विश्वसनीयताक आधार खोजैत अछि।

शुद्ध मैथिलीमे एहि विस्तृत वाद-परम्पराकेँ उपलब्ध कराएब एकटा भाषिक-सांस्कृतिक घटना सेहो अछि। एकर सर्वोत्तम उपयोग निर्विवाद गौरवक घोषणा नहि, नव पीढ़ीक पाठककेँ ई सिखाएब अछि जे ज्ञानक कोनो दावा प्रमाण-परीक्षणसँ ऊपर नहि। एही कसौटी पर ग्रन्थ, ओकर अनुवाद आ ई आलोचना—तीनूक पुनर्परीक्षा निरन्तर सम्भव रहत।

मूल पाठाधारक विषयगत सूची

अध्ययनक प्रमाणाधार लेखकक संलग्न मैथिली-अंग्रेजी DOCX अछि। नीचाँक क्रम मूल फाइलक आन्तरिक भागानुक्रमक अछि; ‘पाठ-खंड’ शब्द प्रकाशकीय पृष्ठसंख्याक स्थान नहि लैत। एहि सूचीक प्रयोजन समीक्षाक विषयगत मिलान अछि।

मूल क्रम	मूल मैथिली शीर्षक	अंग्रेजी समकक्ष
अध्याय १	भूमिका आ प्रारम्भिक दार्शनिक विवेचन	Introduction and Preliminary Philosophical Discussion
अध्याय २	प्रत्यक्षखण्डक परिचय	Introduction to the Perception Section
अध्याय ३	अनुमानखण्डक परिचय	Introduction to the Inference Section
अध्याय ४	ईश्वरानुमानक परिचय	Introduction to the Inference of God
अध्याय ५	उपमानखण्डक परिचय	Introduction to the Comparison Section
अध्याय ६	शब्दखण्डक परिचय	Introduction to the Verbal Testimony Section
परिशिष्ट १	प्रत्यक्षखण्ड	Perception Section
परिशिष्ट २	अनुमानखण्ड	Inference Section
परिशिष्ट ३	ईश्वरानुमान	Inference of God
परिशिष्ट ४	उपमानखण्ड	Comparison Section
परिशिष्ट ५	शब्दखण्ड	Verbal Testimony Section
परिशिष्ट ६	अध्ययन-सहचर	Study Companion

एहि मूल DOCXमे मैथिली आ अंग्रेजी दूनु भाषा-भाग अछि। परिशिष्टसभ पर ‘पूर्ण अनुवाद’क नाम पुस्तकक अपन शीर्षक अछि; मूल संस्कृत पाण्डुलिपिक स्वतंत्र सम्पूर्णता-परीक्षण ताहिसँ स्वतः सिद्ध नहि होइत।

मूल पाठसँ चयनित प्रमाण-सङ्केत

नीचाँ देल छोट पाठखण्ड मूल DOCXक वास्तविक मैथिली अनुच्छेद वा शीर्षकसँ लेल गेल अछि। एकरा विस्तृत प्रमाणक दिशा-सूचक मानल जाए; मूल संस्करणक स्वचालित अनुच्छेद-संख्या मुद्रित पृष्ठसंख्या नहि अछि।

पाठ-सङ्केत 01 • मङ्गलवादक स्वरूप “मङ्गलवादक स्वरूप: मङ्गलाचरणक वास्तविक फल 'ग्रन्थ-समाप्ति' अछि वा 'विघ्न-नाश', आ एहि विषयमे विभिन्न आचार्यसभक तर्क।”

पाठ-सङ्केत 02 • प्रामाण्यवाद “'प्रामाण्यवाद'- ज्ञानक यथार्थता कोना ज्ञात आ उत्पन्न होइत अछि?”

पाठ-सङ्केत 03 • न्यायदर्शनमे “न्यायदर्शनमे प्रत्यक्ष, उपमान, आ शब्दक बाद अनुमान (वा अनुमिति) केँ एकटा स्वतन्त्र आ मान्य प्रमाण मानल गेल अछि।”

पाठ-सङ्केत 04 • उदाहरण: “उदाहरण: "पर्वतपर धूम (धुँआ) अछि, किएक तँ ओतय अग्नि अछि।" एहि अनुमानमे अग्नि हेतु थिक आ धूम साध्य थिक। एतय 'आर्द्र-इन्धन-संयोग' (भिजल काठक संयोग) ओ उपाधि...”

पाठ-सङ्केत 05 • मङ्गलवाद “मङ्गलवाद: विघ्ननाश आ कर्म-समाप्तिक तार्किक कार्य-कारण सम्बन्ध”

पाठ-सङ्केत 06 • प्रामाण्यवाद “प्रामाण्यवाद: ज्ञानक सत्यताक ज्ञप्ति आ उत्पत्तिपर महाविमर्श”

पाठ-सङ्केत 07 • ख्यातिवाद “ख्यातिवाद आ भ्रमक सिद्धान्त: अन्यथाख्यातिवादक तार्किक परिपुष्टि”

पाठ-सङ्केत 08 • प्रत्यक्षलक्षण “प्रत्यक्षलक्षण आ षड्विध सन्निकर्षवाद”

पाठ-सङ्केत 09 • अनुमितिक स्वरूप “अनुमितिक स्वरूप आ लिङ्गपरामर्शक अनिवार्यता”

पाठ-सङ्केत 10 • व्याप्तिवाद “व्याप्तिवाद: अवधारणा, खण्डन आ सिद्धान्त-लक्षण”

पाठ-सङ्केत 11 • उपाधिवाद “उपाधिवाद: सोपाधिक आ अनुपाधिक हेतु”

पाठ-सङ्केत 12 • अर्थापत्ति “अर्थापत्ति प्रमाणक नैयायिक खण्डन आ केवलव्यतिरेकीमे अन्तर्भाव”

पाठ-सङ्केत 13 • गङ्गेशक जीवनवृत्त “गङ्गेशक जीवनवृत्त: आख्यान, पञ्जी-स्रोत आ आधुनिक व्याख्या”

पाठ-सङ्केत 14 • प्रतिज्ञा “प्रतिज्ञा (Proposition): पृथिवी आदि सकर्तृक अछि (क्षित्यादिकं सकर्तृकम्)।”

पाठ-सङ्केत 15 • दाहशक्ति “दाहशक्ति-सिद्धान्त (शक्तिवाद): कारणता आ अभावक यथार्थवाद”

पाठ-सङ्केत 16 • पुरुषार्थवाद “पुरुषार्थवाद: मोक्ष आ तत्त्वज्ञानक मीमांसा”

पाठ-सङ्केत 17 • सादृश्य-विचार “सादृश्य-विचार: उपमानक तात्त्विक आधार”

पाठ-सङ्केत 18 • जरन्नेयायिक “जरन्नेयायिक (जयन्त भट्ट) क मत”

पाठ-सङ्केत 19 • उपदेशवाक्य “उपदेशवाक्यक भूमिका आ स्मरण”

पाठ-सङ्केत 20 • सर्वनाम-शक्ति “सर्वनाम-शक्ति आ उपमानक व्यापक क्षेत्र”

पाठ-सङ्केत 21 • आकाङ्क्षावाद “आकाङ्क्षावाद: वाक्यक संरचनात्मक अपूर्णता आ अपेक्षा”

पाठ-सङ्केत 22 • आसत्तिवाद “आसत्तिवाद: सामीप्य आ कालगत निरन्तरता”

पाठ-सङ्केत 23 • विधिवाद “विधिवाद आ अपूर्ववाद: प्रवृत्तिक मनोविज्ञान आ अदृष्टक परीक्षण”

पाठ-सङ्केत 24 • समासवाद “समासवाद, आख्यातवाद आ धातुवाद: व्याकरणिक संरचनाक तार्किक विश्लेषण”

पाठ-सङ्केत 25 • प्रामाण्य “सम्प्रदायवादी मत: अनुमानसँ प्रामाण्य-ज्ञान”

पाठ-सङ्केत 26 • ज्ञातताक खण्डन “ज्ञातताक खण्डन”

पाठ-सङ्केत 27 • व्याप्ति “व्याप्ति उपाध्यभाव अछि आ उपाध्यभाव केवलाधिकरणस्वरूप अछि”

पाठ-सङ्केत 28 • न्यायवाक्य “न्यायवाक्यक अवयव”

पाठ-सङ्केत 29 • दाहशक्ति “तत्त्वचिन्तामणि: दाहशक्ति-सिद्धान्त”

पाठ-सङ्केत 30 • पुरुषार्थवाद “तत्त्वचिन्तामणि: पुरुषार्थवाद”

पाठ-सङ्केत 31 • गवय “निष्कर्ष: ‘गवय’ शब्दक शक्ति गवयत्वमे अछि”

पाठ-सङ्केत 32 • वेद ““वेद” केँ अनेक शाखाक समूह कहबो उचित नहि; कारण शाखासमूह वास्तवमे वेदद्वारा प्रतिपादित नहि, आ ओ समूह स्वयं वाक्यार्थज्ञानक साधन नहि।”

पाठ-सङ्केत 33 • क्रिया बिना “क्रिया बिना पदार्थसम्बन्धक बोध असम्भव”

एहि सङ्केतसभक उद्धरण एहि आलोचनाक स्रोतपरीक्षणक दिग्दर्शन अछि; अन्य विवरणक व्याख्या मूल अध्याय-परिशिष्टक पूरा पाठाधारपर कएल गेल अछि।

द्विभाषिक पारिभाषिक शब्दावली

रोमन रूप पारिभाषिक पहिचान-सुविधाक लेल देल गेल अछि। अर्थ-नोट एहि समीक्षाक व्याख्यात्मक शब्दानुक्रम अछि; शब्दक सभ सम्भावित दार्शनिक प्रयोगक अन्तिम परिभाषा नहि।

मैथिली-संस्कृत पद	रोमन रूप	व्याख्यात्मक सङ्केत
प्रमाण	pramāṇa	यथार्थ ज्ञानक साधन; प्रसङ्गानुसार स्वरूप जाँचू
प्रमा	pramā	यथार्थ ज्ञान; प्रमाणक साधनसँ भिन्न
प्रामाण्य	prāmāṇya	ज्ञानक यथार्थताक स्थिति
प्रत्यक्ष	pratyakṣa	इन्द्रियादिजन्य प्रत्यक्षबोध
अनुमान	anumāna	अनुमितिक प्रमाणविधि
अनुमिति	anumiti	अनुमानजनित निष्कर्षात्मक ज्ञान
उपमान	upamāna	सादृश्यसँ पद-पदार्थ सम्बन्धबोधक प्रमाण
शब्दप्रमाण	śabda-pramāṇa	प्रामाणिक वाक्यक माध्यमसँ ज्ञान
पूर्वपक्ष	pūrvapakṣa	सिद्धान्तक परीक्षण लेल प्रस्तुत प्रतिमत
सिद्धान्त	siddhānta	आपत्ति-परीक्षा उपरान्त प्रतिपादित मत
पक्ष	pakṣa	जाहि अधिकरणमे साध्य सिद्ध करब अछि
साध्य	sādhya	अनुमानद्वारा सिद्ध करबाक धर्म
हेतु	hetu	साध्य सिद्ध करबाक कारणचिह्न
व्याप्ति	vyāpti	हेतु-साध्यक अविनाभावी सम्बन्ध
लिङ्गपरामर्श	liṅga-parāmarśa	पक्षमे व्याप्तिमत् हेतुक संयुक्त बोध
उपाधि	upādhi	अनुमानक व्याप्ति सीमित करयवला विशिष्ट शर्त
अव्यभिचार	avyabhicāra	हेतुक साध्यसँ अपवादरहित सहचार
अधिकरण	adhikaraṇa	धर्म अथवा अभावक आश्रय
प्रतियोगी	pratiyogin	अभावक प्रतिपक्षी वस्तु वा धर्म
अवच्छेदक	avacchedaka	सम्बन्ध अथवा धर्मक सीमा निर्धारित करयवला पद
सन्निकर्ष	sannikarṣa	प्रत्यक्षज्ञानक इन्द्रिय-विषय सम्बन्ध
समवाय	samavāya	न्याय-वैशेषिकक विशिष्ट अविनाभावी सम्बन्ध

अभाव	abhāva	प्रतियोगी-विषयक अनुपस्थिति
अनुपलब्धि	anupalabdhi	नहि भेटबाक ज्ञान; पृथक प्रमाणत्व विवादित
अनुव्यवसाय	anuvyavasāya	पहिने ज्ञानक द्वितीय-स्तरीय बोध
निर्विकल्पक	nirvikalpaka	निर्धारित विशेषण-विशेष्यविन्यासक बिना ज्ञान
सविकल्पक	savikalpaka	विशेषण-विशेष्यसहित निर्धारित ज्ञान
अर्थापत्ति	arthāpatti	विरोध-समाधानार्थ आवश्यक मान्यता; प्रमाणत्व विवादित
केवलान्वयी	kevalānvayi	नकारात्मक विपक्षक अभाववला अनुमान
केवलव्यतिरेकी	kevalavyatireki	नकारात्मक सहचारपर आधारित अनुमान
सत्प्रतिपक्ष	satpratipakṣa	तुल्यबलवला विरोधी हेतुक दोष
हेत्वाभास	hetvābhāsa	तर्कक यथार्थ हेतु-जकाँ देखाइत दोष
सादृश्य	sādrśya	वस्तुसभक विशिष्ट साम्यसम्बन्ध
शक्ति	śakti	शब्द-अर्थ वा कार्यकारणक सिद्धान्तगत सामर्थ्य
आकाङ्क्षा	ākāṅkṣā	वाक्यक पदसभक परस्पर अपेक्षा
योग्यता	yogyatā	वाक्यार्थक संभाव्य समन्वय
आसत्ति	āsatti	वाक्यपदक उपयुक्त समीपता
तात्पर्य	tātparya	वक्तृ अथवा पाठसन्दर्भक अभिप्रेत अर्थ
लक्षणा	lakṣaṇā	मुख्यार्थ बाधित भेलापर गौणार्थग्रहण
योगरूढ़ि	yogarūḍhi	व्युत्पत्ति आ रूढ़ि संयुक्त पदशक्ति
अपौरुषेय	apauruṣeya	मानवरचनासँ असम्बद्धता सम्बन्धी दार्शनिक दावा
अपूर्व	apūrva	कर्म-अनागत फल सम्बन्धक शास्त्रीय अवधारणा
मोक्ष	mokṣa	दुःखमुक्तिक दार्शनिक लक्ष्य

समग्र शोध-निर्णय : मूल्याङ्कन-सारणी

प्रकरण	समीक्षाक केन्द्र	समेकित आलोचनात्मक निर्णय
प्रत्यक्ष	सन्निकर्ष, भ्रम, प्रामाण्य, अभाव	प्रत्यक्षक सीमाकें वस्तुगत सम्बन्धसँ जोड़बाक संग अनुवादमे अवधारणा स्थिर राखू
अनुमान	व्याप्ति, उपाधि, पक्षता, हेत्वाभास	प्रतिदृष्टान्त आ परिभाषाक संशोधनकें अलग चरणमे देखाऊ
ईश्वरानुमान	कार्यत्व, कर्तृत्व, देहविहीन कर्ता	दृष्टान्तसँ विश्व-कर्तृत्व धरि विस्तृत व्याप्तिक प्रमाणभार स्पष्ट राखू
उपमान	सादृश्य, गवय, पदशक्ति	शब्द सीखबाक फल आ केवल साम्य देखबाक फल अलग राखू
शब्द	आकाङ्क्षा, योग्यता, आसक्ति, तात्पर्य	वाक्यार्थ आ पदर्थक अन्तर; वेद-विवादक अनुमान आ इतिहास अलग राखू
अध्ययन-सहचर	सङ्कलित सूत्र आ मूल वाक्य	छोट उद्धरणकें प्रसङ्गसँ अलग अन्तिम शास्त्र-साक्ष्य नहि बनाऊ
द्विभाषिक संस्करण	मैथिली आ अंग्रेजी अनुवाद	पारिभाषिक सूची आ नकारार्थी अव्ययक तुलनात्मक पाठशोधन आवश्यक

ग्रन्थसूची

मूल समीक्ष्य ग्रन्थः गङ्गेश उपाध्याय। तत्त्वचिन्तामणि। संस्कृतसँ मैथिली अनुवाद, सम्पादन आ पुस्तक-विन्यास : गजेन्द्र ठाकुर। विदेह, परिवर्धित संस्करण २०२६।

निम्न अतिरिक्त पुस्तकक नाम मूल संलग्न संस्करणक अन्तिम ग्रन्थसूचीमे देल अछि। ई नामसभ शोधसन्दर्भक मार्गदर्शक अछि; एहि समीक्षाक साक्ष्य मुख्यतः उपलब्ध मूल DOCX अछि।

Gaṅgeśa Upādhyāya. Tattvacintāmaṇi. Edited by Kamakhyānātha Tarkavāgīśa. 4 volumes. Delhi: Chaukhamba.

Matilal, Bimal Krishna. The Navya-Nyāya Doctrine of Negation. Harvard University Press, 1968.

Matilal, Bimal Krishna. Perception: An Essay on Classical Indian Theories of Knowledge. Clarendon Press, 1986.

Phillips, Stephen H. Epistemology in Classical India: The Knowledge Sources of the Nyāya School. Routledge, 2012.

Goekoop, C. The Logic of Invariable Concomitance in the Tattvacintāmaṇi. D. Reidel, 1967.

Mohanty, Jitendranath. Gaṅgeśa's Theory of Truth. Motilal Banarsidass.

ग्रन्थसूचीमे केवल पुस्तक राखल गेल अछि; वेबसाइटक सूची एहि शोधग्रन्थमे सम्मिलित नहि अछि।

तत्त्वचिन्तामणि

प्रमाण, पूर्वपक्ष आ दार्शनिक विवेक

गङ्गेश उपाध्यायक तत्त्वचिन्तामणि
भारतीय नव्य-न्यायक प्रमाणमीमांसाक
एकटा अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कृति अछि।

एहि सम्पादकीय अध्ययनमे प्रत्यक्ष,
अनुमान, ईश्वरानुमान, उपमान आ शब्दक
विस्तृत तर्क-रचनाक पृथक समीक्षा अछि।

मैथिली-अंग्रेजी पाठक सूक्ष्म तुलना,
पूर्वपक्ष-सिद्धान्तक परीक्षण आ मूल
पारिभाषिक शब्दसभक विश्लेषण सम्मिलित अछि।

मूल संस्कृत रचनाकारक बौद्धिक योगदान
आ गजेन्द्र ठाकुरक मैथिली अनुवादक
सम्पादकीय अवदान अलग रूपेँ परखल गेल अछि।

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

सम्पादक आ समीक्षक : आशीष अनचिन्हार



VIDEHA.CO.IN



VIDEHA GITHUB

विस्तृत ग्रन्थ-समीक्षा — खण्ड २८

www.videha.co.in